

قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

تَبْرَكَ الَّذِي

पारा - 29

eParah

آيَاتُهَا: 30

سُورَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ 77

رُكُوعَاتُهَا: 2

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَارَكَ	الَّذِي	بِيَدِهِ	الْمُلْكُ	وَهُوَ	عَلَى	كُلِّ	شَيْءٍ
बहुत बाबरकत है	वो जो	उसी के हाथ में है	बादशाहत	और वो	ऊपर	हर	चीज के

قَدِيرٌ ①	الَّذِي	خَلَقَ	الْمَوْتَ	وَالْحَيَاةَ	لِيَبْلُوَكُمْ	أَيُّكُمْ
खूब कुदरत रखने वाला है	वो जिसने	पैदा किया	मौत	और ज़िंदगी को	ताकि वो आजमाए तुम्हें	कौन तुम में से

أَحْسَنُ	عَمَلًا ②	وَهُوَ	الْعَزِيزُ	الْغَفُورُ ③	الَّذِي	خَلَقَ	سَبْعَ
ज़्यादा अच्छा है	अमल में	और वो	बहुत ज़बरदस्त है	बहुत बख़्शने वाला है	वो जिसने	पैदा किए	सात

سَبُوتٍ	طَبَاقًا ④	مَا	تَرَى	فِي خَلْقِ	الرَّحْمَنِ	مِنْ تَفَوُّتٍ ⑤
आसमान	ऊपर तले	नहीं	तुम देखोगे	तखलीक में	रहमान की	कोई खलल

فَارْجِعِ	الْبَصَرَ ⑥	هَلْ	تَرَى	مِنْ فُطُورٍ ⑦	ثُمَّ	ارْجِعِ	الْبَصَرَ
फिर लौटाओ	निगाह को	क्या	तुम देखते हो	कोई शिगाफ़	फिर	लौटाओ	निगाह को

كَرَّتَيْنِ	يَنْقَلِبُ	إِلَيْكَ	الْبَصَرَ	خَاسِئًا	وَهُوَ	حَسِيرٌ ⑧	وَلَقَدْ
बार-बार	लौट आएगी	तेरी तरफ़	निगाह	ज़लील हो कर	और वो	थकी हुई होगी	और अलबत्ता तहकीक़

زَيْنًا	السَّهَاءِ	الدُّنْيَا	بِصَابِيحٍ	وَجَعَلْنَاهَا	رُجُومًا	لِلشَّيْطَانِ
मुज़य्यन किया हमने	आसमान को	दुनिया के	साथ चिरागों के	और बनाया हमने उन्हें	मारने की चीज़	शैतानों के लिए

وَأَعْتَدْنَا	لَهُمْ	عَذَابَ	السَّعِيرِ ⑨	وَالَّذِينَ	كَفَرُوا
और तैयार कर रखा है हमने	उनके लिए	अज़ाब	भड़कती आग का	और उनके लिए जिन्होंने	कुफ़ किया

بِرَبِّهِمْ	عَذَابُ	جَهَنَّمَ ⑩	وَبِئْسَ	الْبَصِيرُ ⑪	إِذَا	الْقَوَا
साथ अपने रब के	अज़ाब है	जहन्नम का	और कितना बुरा है	ठिकाना	जब	वो डाले जाएंगे

فِيهَا سَبْعُونَ لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ٧	تَكَادُ تَبِيرُ	وَسَمِعُوا	لَهَا	شَهِيقًا	وَهِيَ	تَفُورُ ٧	تَكَادُ	تَبِيرُ
उसमें	उसका	उसके	उसका	चिल्लाना / दहाड़ना	और वो	जोश खा रही होगी	करीब है कि	वो फट जाए
مِنَ الْغَيْظِ ٨	كُلَّهَا	أُلْقِيَ	فِيهَا	فَوْجٌ	سَالَهُمْ	خَزَنَتُهَا	أَلَمْ	
ग़ज़ब से	जब भी	डाली जाएगी	उसमें	कोई जमाअत	पूछेंगे उनसे	निग़रान उसके	क्या नहीं	
يَأْتِكُمْ	نَذِيرٌ ٨	قَالُوا	بَلَى	قَدْ	جَاءَنَا	نَذِيرٌ ٨	فَكَذَّبْنَا	
आया था तुम्हारे पास	कोई डराने वाला	वो कहेंगे	क्यों नहीं	तहक़ीक़	आया हमारे पास	डराने वाला	तो झुठला दिया हमने	
وَقُلْنَا مَا	نَزَّلَ	اللَّهُ	مِنْ شَيْءٍ ٩	إِنْ	أَنْتُمْ	إِلَّا	فِي ضَلَالٍ	
और कहा हमने	नाज़िल की	अल्लाह ने	कोई चीज़	नहीं	तुम	मगर	गुमराही में	
كَبِيرٍ ٩	وَقَالُوا	لَوْ	كُنَّا	نَسْمَعُ	أَوْ	نَعْقِلُ	مَا	كُنَّا
बहुत बड़ी	और वो कहेंगे	अगर	होते हम	हम सुनते	या	हम समझते	ना	होते हम
فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ١٠	فَاعْتَرَفُوا	بِذُنُوبِهِمْ ٩	فَسُحْقًا	لِّأَصْحَابِ				
साथियों में	भड़कती आग के	तो वो ऐतराफ़ कर लेंगे	अपने गुनाह का	तो दूरी (लानत) है	साथियों के लिए			
السَّعِيرِ ١١	إِنَّ	الَّذِينَ	يَخْشَوْنَ	رَبَّهُمْ	بِالْغَيْبِ	لَهُمْ		
भड़कती आग के	बेशक	वो जो	डरते हैं	अपने रब से	शायबाना	उनके लिए है		
مَغْفِرَةً ١٢	وَأَجْرٌ	كَبِيرٌ ١٢	وَأَسْرَوْا	قَوْلَكُمْ	أَوْ	اجْهَرُوا	بِهِ ٨	
बख़्शिश	और अज़र	बहुत बड़ा	और छुपाओ	बात अपनी	या	ज़ाहिर करो	उसे	
إِنَّهُ	عَلِيمٌ	بِذَاتِ الصُّدُورِ ١٣	أَلَا	يَعْلَمُ	مَنْ	خَلَقَ ٨		
बेशक वो	ख़ूब जानने वाला है	सीनों वाले (भेद)	क्या नहीं	वो जानेगा	जिसने	पैदा किया		
وَهُوَ	اللطيف	الخبير ١٤	هُوَ	الَّذِي	جَعَلَ	لَكُمْ	الْأَرْضَ	
और वो ही है	बहुत बारीकबीन	ख़ूब बाख़बर	वो ही है	जिसने	बनाया	तुम्हारे लिए	ज़मीन को	

ذُلُولًا	فَامْشُوا	فِي مَنَاكِبِهَا	وَكُلُوا	مِنْ رِّزْقِهِ ٭	وَإِلَيْهِ	النُّشُورُ 15
ताबेअ	पस चलो	उसके अतराफ़ में	और खाओ	उसके रिज़क़ में से	और तरफ़ उसी के	दोबारा उठना है
ءَامِنْتُمْ	مَّنْ	فِي السَّيِّئِ	أَنْ	يَخْسِفَ	بِكُمْ	الْأَرْضَ فَإِذَا
क्या बेख़ौफ़ हो गए तुम	उससे जो	आसमान में है	कि	वो धँसा दे	तुम्हें	ज़मीन में तो अचानक
هِيَ	تَهْوُرُ 16	أَمْ	أَمِنْتُمْ	مَّنْ	فِي السَّيِّئِ	أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
वो	वो लरज़ने लगे	क्या	तुम	बेख़ौफ़ हो गए तुम	उससे जो	आसमान में है कि वो भेजे तुम पर
حَاصِبًا ٭	فَسَتَعْلَمُونَ	كَيْفَ	نَذِيرٌ 17	وَلَقَدْ	كَذَّبَ	الَّذِينَ
पत्थरों की आँधी	पस अनक़रीब तुम जान लोगे	कैसा है	डराना मेरा	और अलबत्ता तहकीक़	झुठलाया	उन लोगों ने जो
مِنْ قَبْلِهِمْ	فَكَيْفَ	كَانَ	نَكِيرٌ 18	أَوْ لَمْ	يَرَوْا	إِلَى الطَّيْرِ
उनसे पहले थे	तो कैसा	था	अज़ाब मेरा	क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	तरफ़ परिंदों के
فَوْقَهُمْ	صَفَّتْ	وَيَقْبِضَنَّ ٭	مَا	يُسْكُهُنَّ	إِلَّا	الرَّحْمَنُ ٭
अपने ऊपर	पर फैलाए हुए	और वो समेट लेते हैं	नहीं	थामता उन्हें	मगर	रहमान
إِنَّهُ	بِكُلِّ شَيْءٍ عَمٍ	بَصِيرٌ 19	أَمَّنْ	هَذَا	الَّذِي	هُوَ جُنْدٌ
बेशक वो	हर चीज़ को	ख़ूब देखने वाला है	या कौन है	वो	जो	वो लश्कर हो
لَكُمْ	يَنْصُرُكُمْ	مِّنْ دُونِ	الرَّحْمَنِ ٭	إِنْ	الْكَافِرُونَ	إِلَّا
तुम्हारा	वो मदद करे तुम्हारी	सिवाय	रहमान के	नहीं हैं	काफ़िर	मगर
فِي غُرُورٍ 20	أَمَّنْ	هَذَا	الَّذِي	يَرْزُقُكُمْ	إِنْ	أَمْسَكَ رِزْقَهُ ٭
धोखे में	या कौन है	वो	जो	रिज़क़ देगा तुम्हें	अगर	वो रोक ले रिज़क़ अपना
بَلْ	لَّجُّوْا	فِي عُتُوٍّ	وَنُفُورٍ 21	أَفَمَنْ	يَشِيْ	مُكِبًّا عَلَى وَجْهِهِ
बल्कि	वो अड़े हुए हैं	सरकशी में	और बिदकने में	क्या फिर जो	चलता है	आँधा अपने चेहरे पर

أَهْدَى	أَمَّنْ	يُسْشَى	سَوِيًّا	عَلَى صِرَاطٍ	مُسْتَقِيمٍ ②②	قُلْ
ज़्यादा हिदायत याफ़ता है	या जो	चलता है	सीधा	ऊपर रास्ते	सीधे के	कह दीजिए
هُوَ	الَّذِي	أَنْشَأَكُمْ	وَجَعَلَ	لَكُمْ	السَّمْعَ	وَالْأَبْصَارَ
वो ही है	जिसने	पैदा किया तुम्हें	और उसने बनाए	तुम्हारे लिए	कान	और आंखें
وَالْأَفْئِدَةَ ①	قَلِيلًا مَّا	تَشْكُرُونَ ②③	قُلْ	هُوَ	الَّذِي	ذَرَأَكُمْ
और दिल	कितना कम	तुम शुक्र अदा करते हो	कह दीजिए	वो ही है	जिसने	फैलाया तुम्हें
فِي الْأَرْضِ	وَالِيهِ	تُحْشَرُونَ ②④	وَيَقُولُونَ	مَتَى	هَذَا	الْوَعْدُ
ज़मीन में	और तरफ़ उसी के	तुम इकट्ठे किए जाओगे	और वो कहते हैं	कब होगा	ये	वादा
إِنْ كُنْتُمْ	صَادِقِينَ ②⑤	قُلْ	إِنَّمَا	الْعِلْمُ	عِنْدَ	اللَّهِ ①
अगर	हो तुम	सच्चे	कह दीजिए	बेशक	इल्म (उसका)	पास है
وَأِنَّمَا	أَنَا	نَذِيرٌ	مُّبِينٌ ②⑥	فَلَمَّا	رَأَوْهُ	زُلْفَةً سَيِّئَتْ
और बेशक	मैं	डराने वाला हूँ	खुल्लम-खुल्ला	फिर जब	वो देख लेंगे उसे	नज़दीक
وَجُوهُ	الَّذِينَ	كَفَرُوا	وَقِيلَ	هَذَا	الَّذِي	كُنْتُمْ بِهِ
चेहरे	उनके जिन्होंने	कुफ़्र किया	और कह दिया जाएगा	ये है	वो जो	थे तुम
تَدْعُونَ ②⑦	قُلْ	أَرَأَيْتُمْ	إِنْ	أَهْلَكْنِي	اللَّهُ	وَمَنْ
तुम माँगा करते	कह दीजिए	क्या देखा तुमने	अगर	हलाक कर दे मुझे	अल्लाह	और उसे जो
أَوْ	رَحِمْنَا ①	فَمَنْ	يُجِيرُ	الْكُفْرَيْنِ	مِنْ عَذَابٍ	أَلِيمٍ ②⑧
या	वो रहम करे हम पर	तो कौन	पनाह देगा	काफ़िरों को	अज़ाब से	दर्दनाक
هُوَ	الرَّحْمَنُ	أَمَّا	بِهِ	وَعَلَيْهِ	تَوَكَّلْنَا ①	فَسَتَعْلَمُونَ
वो ही	रहमान है	ईमान लाए हम	उस पर	और उसी पर	तबक़ल किया हमने	पस अनक़रीब तुम जान लोगे

مَنْ هُوَ	فِي ضَلَالٍ	مُبِينٍ 29	قُلْ	أَرَأَيْتُمْ	إِنْ	أَصْبَحَ
कौन है	जो	गुमराही में है	खुली-खुली	कह दीजिए	क्या देखा तुमने	अगर
हो जाए						

مَأْوَكُمْ	غَوْرًا	فَمَنْ	يَأْتِيَكُمْ	بِأَسَاءٍ	مَعِينٍ 30
पानी तुम्हारा	गहरा	तो कौन है जो	लाए तुम्हारे पास	पानी	बहता हुआ

آيَاتُهَا: 52	سُورَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ 2	رُكُوعَاتُهَا: 2
---------------	--------------------------------	------------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ن وَالْقَلَمِ	وَمَا	يَسْطُرُونَ 1	مَا	أَنْتَ	بِنِعْمَةِ	رَبِّكَ
कलम की	और उसकी जो	वो लिखते हैं	नहीं हैं	आप	नेअमत से	अपने रब की

بِجُنُونٍ 2	وَإِنَّ	لَكَ	لَآجِرًا	غَيْرَ	مَبْنُونٍ 3	وَإِنَّكَ
कोई मजनून	और बेशक	आपके लिए	यक्रीनन अजर है	ना	खत्म होने वाला	और बेशक आप

لَعَلَّ خُلِقَ عَظِيمٌ 4	فَسَتُبْصِرُ	وَيُبْصِرُونَ 5	بِأَيِّكُمْ
यक्रीनन बुलंद अखलाक पर हैं	पस अनकरीब आप देखेंगे	और वो भी देखेंगे	कौन तुम में से

الْمَفْتُونُ 6	إِنَّ	رَبَّكَ	هُوَ	أَعْلَمُ	بِمَنْ	ضَلَّ	عَنْ سَبِيلِهِ ٧
फ़ितना में डाला हुआ है	बेशक	रब आपका	वो	ज़्यादा जानता है	उसे जो	भटक गया	उसके रास्ते से

وَهُوَ	أَعْلَمُ	بِالْمُهْتَدِينَ 7	فَلَا	تُطِيعُ	الْمُكَذِّبِينَ 8	وَدُّوا
और वो	ज़्यादा जानता है	हिदायत पाने वालों को	पस ना	आप इताअत कीजिए	झुलाने वालों की	वो चाहते हैं

لَوْ	تُدْهِنُ	فَيُدْهِنُونَ 9	وَلَا	تُطِيعُ	كُلَّ	حَلَافٍ
काश	आप ढीले पड़ें	तो वो भी ढीले पड़ जाएं	और ना	आप इताअत कीजिए	हर	बहुत कसमें खाने वाले

مَّهِينٍ 10	هَمَّازٍ	مَشَّاءٍ	بِنَيْمٍ 11	مَنْعٍ	لِّلْخَيْرِ	مُعْتَدٍ
निहायत हक़ीर की	बड़ा ही ऐब-जो	बहुत चलने वाला	साथ चुगलखोरी के	बहुत रोकने वाला	भलाई का	हद से बढ़ने वाला

أَثِيمٌ ⑫	عُتِلَّ	بَعْدَ	ذَلِكَ	زَنِيمٌ ⑬	أَنْ	كَانَ	ذَامَالٍ
सख्त गुनाहगार	बद मिज़ाज	बाद	इसके	बेनसब है	कि	है वो	माल वाला
وَبَنِينَ ⑭	إِذَا	تُثْلَى	عَلَيْهِ	أَيُّنَا	قَالَ	أَسَاطِيرُ	الْأَوَّلِينَ ⑮
और बेटों वाला	जब	पढ़ी जाती हैं	उस पर	आयात हमारी	वो कहता है	कहानियां हैं	पहलों की
سَنَسِبُهُ	عَلَى الْخُرْطُومِ ⑯	إِنَّا	بَلَوْنَهُمْ	كَمَا	بَلَوْنَا		
अनकरीब हम दाग लगाएंगे उसे	सूँड (नाक) पर	बेशक हम	आज़माया हमने उन्हें	जैसा कि	आज़माया हमने		
أَصْحَابَ الْجَنَّةِ ⑰	إِذْ	أَقْسَمُوا	لَيَصْرِمُنَّهَا	مُصْبِحِينَ ⑱	وَلَا		
बाग़ वालों को	जब	उन्होंने कसम खाई	अलबत्ता वो ज़रूर काट लेंगे उसे	सुबह सवेरे ही	और नहीं		
يَسْتَتْنُونَ ⑲	فَطَافَ	عَلَيْهَا	طَائِفٌ	مِّن رَّبِّكَ	وَهُمْ		
वो इस्तिस्ना कर रहे थे	तो फिर गया	उस पर	एक फिरने वाला	आपके रब की तरफ़ से	और वो		
نَائِسُونَ ⑳	فَاصْبَحَتْ	كَالضَّرِيمِ ㉑	فَتَنَادَوْا	مُصْبِحِينَ ㉒			
सो रहे थे	तो वो (बाग़) हो गया	मानिंद जड़ कटी खेती के	फिर वो एक दूसरे को पुकारने लगे	सुबह सवेरे ही			
أَنْ	اغْدُوا	عَلَى حَرْثِكُمْ	إِنْ	كُنْتُمْ	طَرِمِينَ ㉓	فَانْطَلَقُوا	
कि	सुबह सवेरे चलो	अपने खेत पर	अगर	हो तुम	(फल) तोड़ने वाले	तो वो चल दिए	
وَهُمْ	يَتَخَفَتُونَ ㉔	أَنْ	لَّا يَدْخُلْنَهَا	الْيَوْمَ	عَلَيْكُمْ		
और वो	वो चुपके-चुपके आपस में बातें कर रहे थे	कि	ना हरगिज़ दाख़िल हो उसमें	आज	तुम पर		
مَّسْكِينَ ㉕	وَّاغْدُوا	عَلَى حَرْدٍ	قَدِيرِينَ ㉖	فَلَمَّا	رَأَوْهَا		
कोई मिसकीन	और वो सुबह सवेरे निकले	रोकने पर	क्रादिर बनते हुए	तो जब	उन्होंने देखा उसे		
قَالُوا ㉗	إِنَّا	لَضَالُّونَ ㉘	بَلْ	نَحْنُ	مَحْرُومُونَ ㉙	قَالَ	
वो कहने लगे	बेशक हम	अलबत्ता रास्ता भूल गए हैं	बल्कि	हम	महरूम कर दिए गए हैं	कहा	

أَوْسَطُهُمْ	أَلَمْ	أَقُلْ	لَكُمْ	لَوْلَا	تُسَبِّحُونَ 28	قَالُوا
उनमें से बेहतर ने	क्या नहीं	मैंने कहा था	तुम्हें	क्यों नहीं	तुम तस्बीह करते	उन्होंने कहा
سُبْحَنَ	رَبِّنَا	إِنَّا	كُنَّا	ظَلِيمِينَ 29	فَاقْبَلَ	بَعْضُهُمْ
पाक है	रब हमारा	बेशक हम	थे हम ही	ज़ालिम	तो मुताबज्जह हुआ	बाज़ उनका
عَلَى بَعْضٍ	يَتَلَاوُمُونَ 30	قَالُوا	يُؤْيِدُنَا	إِنَّا	كُنَّا	طَغِينَ 31
बाज़ पर	आपस में मलामत करते हुए	उन्होंने कहा	हाय अफ़सोस हम पर	बेशक हम	थे हम ही	सरकश
عَلَى	رَبِّنَا	أَنْ	يُبَدِّلَنَا	خَيْرًا	مِنْهَا	إِنَّا
उम्मीद है	रब हमारा	कि	वो बदल कर दे हमें	बेहतर	इस से	बेशक हम
رَغِبُونَ 32	كَذَلِكَ	الْعَذَابُ	وَالْعَذَابُ	الْآخِرَةِ	أَكْبَرُ	
रसबत करने वाले हैं	इसी तरह होता है	अज़ाब	और यक़ीनन अज़ाब	आख़िरत का	ज़्यादा बड़ा है	
لَوْ	كَانُوا	يَعْلَمُونَ 33	إِنَّ	لِلْمُتَّقِينَ	عِنْدَ	رَبِّهِمْ
काश	होते	वो जानते	बेशक	मुत्तक़ी लोगों के लिए	पास	उनके रब के
النَّعِيمِ 34	أَفَنَجْعَلُ	الْمُسْلِمِينَ	كَالْمُجْرِمِينَ 35	مَا	لَكُمْ	وَقَعَةً
नेअमतों वाले	क्या भला हम कर देंगे	फ़रमाबरदारों को	मुजरिमों की तरह	क्या है	तुम्हें	
كَيْفَ	تَحْكُمُونَ 36	أَمْ	لَكُمْ	كِتَابٌ	فِيهِ	تَدْرُسُونَ 37
कैसे	तुम फ़ैसले करते हो	या	तुम्हारे पास	कोई किताब है	जिसमें	तुम पढ़ते हो
لَكُمْ	فِيهِ	لَهَا	تَخَيَّرُونَ 38	أَمْ	لَكُمْ	أَيَّانَ
तुम्हारे लिए	उसमें	अलबत्ता वो है जो	तुम पसंद करते हो	या	तुम्हारे लिए	हम पर
بَالِغَةً	إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ 39	إِنَّ	لَكُمْ	لَهَا	تَحْكُمُونَ 39	
पहुँचने वाली	क़यामत के दिन तक	कि बेशक	तुम्हारे लिए	अलबत्ता वो है जो	तुम फ़ैसला करोगे	

سَلَّمُ	أَيُّهُمْ	بِذَلِكَ	زَعِيمٌ ④①	أَمْ	لَهُمْ	شُرَكَاءُ ٭
पूछिए उनसे	कौन उनमें से	उसका	जामिन है	या	उनके लिए	कुछ शरीक हैं
فَلْيَأْتُوا	بِشُرَكَائِهِمْ	إِنْ	كَانُوا	صَادِقِينَ ④②	يَوْمَ	يُكْشَفُ
पस चाहिए कि वो ले आएँ	अपने शरीकों को	अगर	हैं वो	सच्चे	जिस दिन	खोल दिया जाएगा
عَنْ سَاقٍ	وَيُدْعَوْنَ	إِلَى السُّجُودِ	فَلَا	يَسْتَطِيعُونَ ④③	خَاشِعَةً	
पिंडली से	और वो बुलाए जाएँगे	तरफ़ सजदों के	तो ना	वो इस्तिताअत रखते होंगे	नीची होंगी	
أَبْصَارُهُمْ	تَرَهُقُهُمْ	ذِلَّةٌ ٭	وَقَدْ	كَانُوا	يُدْعَوْنَ	إِلَى السُّجُودِ
निगाहें उनकी	छा रही होगी उन पर	ज़िल्लत	और तहकीक़	थे वो	वो बुलाए जाते	तरफ़ सज्दों के
وَهُمْ	سَلِيمُونَ ④④	فَذَرْنِي	وَمَنْ	يُكْذِبُ	بِهَذَا	الْحَدِيثِ ٭
जब कि वो	सही सलामत थे	पस छोड़ दो मुझे	और उसे जो	झुठलाता है	इस	बात को
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ	مِّنْ حَيْثُ	لَا يَعْلَمُونَ ④⑤	وَأُمْلِي	لَهُمْ ٭		
अनक़रीब हम आहिस्ता-आहिस्ता ले जाएँगे उन्हें	जहां से	ना वो जानते होंगे	और मैं मोहलत दे रहा हूं	उन्हें		
إِنَّ	كَيْدِي	مَتِينٌ ④⑥	أَمْ	تَسْأَلُهُمْ	أَجْرًا	فَهُمْ
बेशक	तदबीर मेरी	निहायत मज़बूत है	या	आप सवाल करते हैं उनसे	किसी अजर का	तो वो
مِّنْ مَّغْرَمٍ	مُّثْقَلُونَ ④⑦	أَمْ	عِنْدَهُمْ	الْغَيْبُ	فَهُمْ	يَكْتُبُونَ ④⑧
तावान से	दबे जा रहे हैं	या	उनके पास	कोई ग़ैब है	पस वो	वो लिख रहे हैं
فَاصْبِرْ	لِحُكْمِ	رَبِّكَ	وَلَا	تَكُنْ	كَصَاحِبِ الْحُوتِ ٭	إِذْ
पस सब्र कीजिए	हुक़्म के लिए	अपने रब के	और ना	आप हों	मछली वाले की तरह	जब
نَادَى	وَهُوَ	مَكْظُومٌ ④⑨	لَوْلَا	أَنْ	تَذَرَكُهُ	نِعْمَةٌ
उसने पुकारा	इस हाल में कि वो	ग़म से भरा हुआ था	अगर ना (होती ये बात)	कि	पा लिया उसे	एक नेअमत ने

مِنْ رَبِّهِ	لَنْبَذَ	بِالْعَرَاءِ	وَهُوَ	مَذْمُومٌ ④٩	فَاجْتَبَاهُ
उसके रब की तरफ़ से	अलबत्ता वो फेंक दिया जाता	चटियल मैदान में	और वो	मज़मूमत ज़दा होता	तो चुन लिया उसे

رَبُّهُ	فَجَعَلَهُ	مِنَ الصَّالِحِينَ ⑤٠	وَإِنْ	يَكَادُ	الَّذِينَ كَفَرُوا
उसके रब ने	तो उसने बना दिया उसे	सालेह लोगों में से	और बेशक	क़रीब है कि	जिन्होंने

لَيَزِلُّ قُنُوكَ	بِأَبْصَارِهِمْ	لَبَّأَ	سَبْعُوا	الذِّكْرُ	وَيَقُولُونَ إِنَّهُ
अलबत्ता वो फुसला देंगे आपको	अपनी निगाहों से	जब	वो सुनते हैं	ज़िक्र को	और वो कहते हैं

لَبَجْنُونٌ ⑤١	وَمَا	هُوَ	إِلَّا	ذِكْرٌ	لِّلْعَالَمِينَ ⑤٢
अलबत्ता मजनून है	और नहीं है	वो	मगर	एक नसीहत	तमाम ज़हान वालों के लिए

آيَاتُهَا: 52	سُورَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ 69	رُكُوعَاتُهَا: 2
---------------	-----------------------------------	------------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَاقَّةُ ①	مَا	الْحَاقَّةُ ②	وَمَا	أَدْرَاكَ	مَا	الْحَاقَّةُ ③
हक़ होने वाली	क्या है	हक़ होने वाली	और क्या	बताए आपको	क्या है	हक़ होने वाली

كَذَّبَتْ	ثَمُودُ	وَعَادُ	بِالْقَارِعَةِ ④	فَأَمَّا	ثَمُودُ	فَاهْلِكُوا
झुठलाया	समूद	और आद ने	खटखटाने वाली को	तो रहे	समूद	पस वो हलाक किए गए

بِالطَّاغِيَةِ ⑤	وَأَمَّا	عَادُ	فَاهْلِكُوا	بِرِيحٍ	صَرْصَرٍ	عَاتِيَةٍ ⑥
हद से गुज़रने वाली से	और रहे	आद	पस वो हलाक किए गए	हवा से	ठंडी यख़	सरकश

سَخَّرَهَا	عَلَيْهِمْ	سَبْعَ	لَيَالٍ	وَتَبْنِيَةٍ	أَيَّامٍ ⑦	حُسُومًا ⑧	فَتَرَى
उसने मुसल्लत कर दिया उसे	उन पर	सात	रातें	और आठ	दिन	मुसलसल	तो आप देखते

الْقَوْمَ	فِيهَا	صَرْعَى ⑨	كَانَّهُمْ	أَعْجَازُ	نَخْلٍ	خَاوِيَةٍ ⑦
उन लोगों को	उसमें	पछाड़े हुए	गोया कि वो	तने हैं	खज़ूर के दरख़्त के	खोखले

فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ⑧	وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ	وَالْمُوتِفِكْتُ بِالْخَاطِئَةِ ⑨	فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ	وَالْمُوتِفِكْتُ بِالْخَاطِئَةِ ⑨	فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ	وَالْمُوتِفِكْتُ بِالْخَاطِئَةِ ⑨	فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ
तो क्या	आप देखते हैं	उनका	कोई बाक़ी बचा हुआ	और आया	फ़िरऔन	और जो	उस से पहले थे
أَخَذَةً رَّابِيَةً ⑩	إِنَّا لَنَجْعَلُهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ⑫	فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ⑬	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ
पकड़ना	सख़्त	बेशक हम	जब	तुग़यानी की	पानी ने	सवार किया हमने तुम्हें	पकड़ना
فِي الْجَارِيَةِ ⑪	لَنَجْعَلُهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ⑫	فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ⑬	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ
कश्ती में	ताकि हम बना दें उसे	तुम्हारे लिए	याद दिहानी	और याद रखे उसे	कान	याद रखने वाला	कश्ती में
وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا ⑭	وَاحِدَةٌ ⑬	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ	وَحِيلَتِ الْأَرْضُ
और पहाड़	तो दोनों रेज़ा-रेज़ा कर दिए जाएंगे	रेज़ा-रेज़ा किए जाना	एक ही बार	तो उस दिन	वाक़ेअ हो जाएगी	वाक़ेअ हो जाएगी	और पहाड़
وَالْوَاقِعَةُ ⑮	وَأَنْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ⑯	وَالْوَاقِعَةُ ⑮	وَأَنْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ⑯	وَالْوَاقِعَةُ ⑮	وَأَنْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ⑯	وَالْوَاقِعَةُ ⑮	وَأَنْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ⑯
वाक़ेअ होने वाली	और फट जाएगा	आसमान	तो वो	उस दिन	कमज़ोर होगा	और फ़रिश्ते	वाक़ेअ होने वाली
عَلَى أَرْجَائِهَا ⑰	وَيَحِبُّ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ	وَيَحِبُّ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ	وَيَحِبُّ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ	وَيَحِبُّ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ	وَيَحِبُّ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ	وَيَحِبُّ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ	وَيَحِبُّ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ
उसके किनारों पर होंगे	और उठाएंगे	अर्श	आपके रब का	अपने ऊपर	उस दिन	उस दिन	उसके किनारों पर होंगे
ثَنِيَّةٌ ⑰	يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ⑱	يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ⑱	يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ⑱	يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ⑱	يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ⑱	يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ⑱	يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ⑱
आठ (फ़रिश्ते)	उस दिन	तुम पेश किए जाओगे	ना छुप सकेगी	तुम से	कोई छुपने वाली	तो रहा	आठ (फ़रिश्ते)
مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ⑲	فَيَقُولُ هَؤُلَاءِ أَقْرَبُوا	فَيَقُولُ هَؤُلَاءِ أَقْرَبُوا	فَيَقُولُ هَؤُلَاءِ أَقْرَبُوا	فَيَقُولُ هَؤُلَاءِ أَقْرَبُوا	فَيَقُولُ هَؤُلَاءِ أَقْرَبُوا	فَيَقُولُ هَؤُلَاءِ أَقْرَبُوا	فَيَقُولُ هَؤُلَاءِ أَقْرَبُوا
वो जो	दिया गया	किताब अपनी	अपने दाएँ हाथ में	तो वो कहेगा	लो	पढ़ो	वो जो

كِتَابِيهِ ١٩	إِنِّي	ظَنَنْتُ	أَنِّي	مُلِقٍ	حِسَابِيهِ ٢٠	فَهُوَ
किताब मेरी	बेशक मैं	यक्रीन रखता था मैं	कि बेशक मैं	मुलाक़ात करने वाला हूँ	अपने हिसाब से	तो वो
فِي عِيشَةٍ	رَاضِيَةٍ ٢١	فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ٢٢	قُطُوفُهَا	دَانِيَةٍ ٢٣	كُلُوا	
ज़िंदगी में होगा	दिल पसंद	बुलंद जन्नत में	फल जिसके	करीब होंगे	खाओ	
وَاشْرَبُوا	هَذِيغًا	بِمَا	أَسْلَفْتُمْ	فِي الْأَيَّامِ	الْخَالِيَةِ ٢٤	وَأَمَّا
और पियो	मज़े से	बवजह उसके जो	कर चुके तुम	दिनों में	गुज़िश्ता	और रहा
مَنْ	أُوتِيَ	كِتَابَهُ	بِشِبَالِهِ ٢٥	فَيَقُولُ	يَلِيَّتَنِي	لَمْ
वो जो	दिया गया	किताब अपनी	अपने बाएँ हाथ में	तो वो कहेगा	ऐ काश कि मैं	ना
كِتَابِيهِ ٢٥	وَلَمْ	أَدْرِ	مَا	حِسَابِيهِ ٢٦	يَلِيَّتَهَا	كَانَتْ
किताब अपनी	और ना	मैं जानता	क्या है	हिसाब मेरा	ऐ काश कि वो	होती वो
الْقَاضِيَةِ ٢٧	مَا	أَغْنَى	عَنِّي	مَالِيَهُ ٢٨	هَلَكَ	عَنِّي
क़ैसलाकुन	ना	काम आया	मुझे	माल मेरा	हलाक हो गई	मुझसे
خُذُوهُ	فَعَلُّوهُ ٣٠	ثُمَّ	الْجَحِيمِ	صَلُّوهُ ٣١	ثُمَّ	فِي سِلْسِلَةٍ
पकड़ो उसे	फिर तौक़ पहनाओ उसे	फिर	जहन्नम में	झोंको उसे	फिर	एक जंजीर में
ذَرَعُهَا	سَبْعُونَ	ذَرَاعًا	فَاسْلُكُوهُ ٣٢	إِنَّهُ	كَانَ	لَا يُؤْمِنُ
पैमाइश जिसकी	सत्तर	गज़ है	पस दाख़िल करो उसे	बेशक वो	था वो	ना वो ईमान रखता
بِاللَّهِ	الْعَظِيمِ ٣٣	وَلَا	يَحْضُ	عَلَى طَعَامٍ	الْمُسْكِينِ ٣٤	فَلَيْسَ
अल्लाह पर	जो अज़मत वाला है	और ना	वो तरगीब देता था	खाना (खिलाने) पर	मिस्कीन को	तो नहीं है
لَهُ	الْيَوْمَ	هَهُنَا	حَيِّمٌ ٣٥	وَلَا	طَعَامٌ	إِلَّا
उसके लिए	आज	यहाँ	कोई गहरा दोस्त	और ना	कोई खाना	मगर
						ज़ख्मों के धोवन का

لَا يَأْكُلُهُ	إِلَّا	الْخَاطِئُونَ 37	فَلَا	أُقْسِمُ	بِهَا	تُبْصِرُونَ 38
नहीं खाएंगे उसे	मगर	ख़ताकार	पस नहीं	मैं क़सम खाता हूँ	उसकी जो	तुम देखते हो
وَمَا	لَا تُبْصِرُونَ 39	إِنَّهُ	لَقَوْلُ	رَسُولٍ	كَرِيمٍ 40	وَمَا
और जो	नहीं तुम देखते	बेशक ये	यक़ीनन क़ौल है	एक पैयामबर	मोअज़्ज़िज़ का	और नहीं
هُوَ	بِقَوْلِ شَاعِرٍ ط	قَلِيلًا مَّا	تُؤْمِنُونَ 41	وَلَا	بِقَوْلِ كَاهِنٍ ط	
ये	क़ौल	कितना कम	तुम ईमान लाते हो	और ना ही	क़ौल है	किसी काहिन का
قَلِيلًا مَّا	تَذَكَّرُونَ 42	تَنْزِيلُ	مِّن رَّبِّ	الْعَالَمِينَ 43	وَلَوْ	تَقَوْلَ
कितना कम	तुम नसीहत पकड़ते हो	नाज़िल करदा है	रब की तरफ़ से	तमाम ज़हानों के	और अगर	वो गढ़ लेता
عَلَيْنَا	بَعْضُ	الْأَقَاوِيلِ 44	لَاخِذْنَا	مِنْهُ	بِالْيَمِينِ 45	ثُمَّ
हम पर	बाज़	बातें	अलबत्ता पकड़ लेते हम	उसे	दाएँ हाथ से	फिर
لَقَطَعْنَا	مِنْهُ	الْوَتِينَ 46	فَبَا	مِنْكُمْ	مِّنْ أَحَدٍ	عَنْهُ
अलबत्ता काट देते हम	उसकी	रगे जान	तो ना होता	तुम में से	कोई एक	उस से
حُجْرَيْنِ 47	وَإِنَّهُ	لَتَذَكُّرَةٌ	لِّلْمُتَّقِينَ 48	وَإِنَّا	لَنَعْلَمُ	أَنَّ
रोकने वाला	और बेशक वो	अलबत्ता एक नसीहत है	मुत्तक़ी लोगों के लिए	और बेशक हम	अलबत्ता हम जानते हैं	कि बेशक
مِنْكُمْ	مُكَذِّبِينَ 49	وَإِنَّهُ	لَحَسْرَةٌ	عَلَى الْكَافِرِينَ 50	وَإِنَّهُ	
तुम में कुछ	झुठलाने वाले हैं	और बेशक वो	अलबत्ता हसरत है	काफ़िरों पर	और बेशक वो	
لَحَقُّ	الْيَقِينِ 51	فَسَبِّحْ	بِاسْمِ	رَبِّكَ	الْعَظِيمِ 52	
अलबत्ता हक़ है	यक़ीनी	पस तस्बीह कीजिए	नाम की	अपने रब के	जो अज़मत वाला है	

سَال	سَائِلٌ	بَعْدَابٍ	وَاقِعٌ ①	لِلْكَافِرِينَ	لَيْسَ لَهُ
सवाल किया	सवाल करने वाले ने	उस अज्ञाब का	जो वाक़ेअ होने वाला है	काफ़िरों के लिए	उसे नहीं है
دَافِعٌ ②	مِّنَ اللَّهِ	ذِي الْمَعَارِجِ ③	تَعْرُجُ	الْبَلْبَكَةُ	وَالرُّوحُ
कोई दफ़ा करने वाला	अल्लाह की तरफ़ से	जो उरूज वाला है	चढ़ते हैं	फ़रिश्ते	और रूह
إِلَيْهِ	فِي يَوْمٍ	كَانَ	مِقْدَارُهُ	خَمْسِينَ	أَلْفَ سَنَةٍ ④
तरफ़ उसके	एक दिन में	है	मिक्कदार जिसकी	पचास	हज़ार साल
فَاصْبِرْ	صَبْرًا	جَبِيلًا ⑤	إِنَّهُمْ	يَرَوْنَهُ	بَعِيدًا ⑥
पस सब्र कीजिए	सब्र	जमील/खूबसूरत	बेशक वो	वो देखते हैं उसे	बहुत दूर
قَرِيبًا ⑦	يَوْمَ	تَكُونُ	السَّهَاءُ	كَالْمُهْلِ ⑧	وَتَكُونُ
बहुत करीब	जिस दिन	होगा	आसमान	तेल की तलछट की तरह	और होंगे
كَالْعِهْنِ ⑨	وَلَا	يَسْأَلُ	حَيِّمٌ	حَيِّبًا ⑩	يُبْصِرُونَهُمْ ط
धुनकी हई रूई की तरह	और ना	पूछेगा	कोई गहरा दोस्त	किसी गहरे दोस्त को	वो दिखाए जाएंगे उन्हें
الْجُرْمُ	لَوْ	يَفْتَدِي	مِنْ عَذَابٍ	يَوْمَئِذٍ	بِبَنِيهِ ⑪
मुजरिम	काश	फ़िदये में दे दे	अज्ञाब से (बचने के लिए)	उस दिन के	अपने बेटों को
وَصَاحِبَتِهِ	وَإِخِيهِ ⑫	وَفَصِيلَتِهِ	الَّتِي	تُؤَيِّهِ ⑬	وَمَنْ
और अपनी बीवी को	और अपने भाई को	और अपने कुनबे को	वो जो	पनाह देता था उसे	और जो
فِي الْأَرْضِ	جَمِيعًا	ثُمَّ	يُنْجِيهِ ⑭	كَلَّا ط	إِنَّهَا
ज़मीन में है	सब के सब को	फिर	वो निजात दिला दे उसे	हरगिज़ नहीं	बेशक वो
نَزَاعَةً	لِّلشَّوْىِ ⑯	تَدْعُو	مَنْ	أَدْبَرَ	وَتَوَلَّى ⑰
खींचने वाली है	मुंह की खाल को	वो पुकारेगी	उसे जिसने	पीठ फेरी	और उसने मुंह मोड़ा
					और उसने जमा किया

فَاَوْعَىٰ ⑱	إِنَّ	الْإِنْسَانَ	خُلِقَ	هَلُوعًا ⑲	إِذَا	مَسَّهُ	الشَّرُّ
फिर उसने समेट कर रखा	बेशक	इंसान	वो पैदा किया गया	थुड़दिला दिल	जब	पहुंचती है उसे	तकलीफ़
جَزُوعًا ⑳	وَإِذَا	مَسَّهُ	الْخَيْرُ	مَنُوعًا ㉑	إِلَّا	الْبَصِلِينَ ㉒	
बहुत जज़ा फ़ज़ा करने वाला है	और जब	पहुंचती है उसे	भलाई	बहुत रोकने वाला है	सिवाए	नमाज़ियों के	
الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ	دَائِبُونَ ㉓	وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ					
वो जो	वो	अपनी नमाज़ों पर	दवाम/हमेशगी इछ्तियार करने वाले हैं	और वो जो	मालों में उनके		
حَقٌّ مَّعْلُومٌ ㉔	لِلسَّائِلِ	وَالْبَحْرُومِ ㉕	وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ				
हक़ है	मालूम/मुकर्रर	वास्ते सवाली	और महरूम के	और वो जो	तसदीक़ करते हैं		
بِیَوْمِ الدِّينِ ㉖	وَالَّذِينَ هُمْ	مِّنْ عَذَابٍ رَبِّهِمْ	مُشْفِقُونَ ㉗				
दिन की	बदले के	और वो जो	वो	अज़ाब से	अपने रब के	डरने वाले हैं	
إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ	غَيْرُ مَأْمُونٍ ㉘	وَالَّذِينَ هُمْ	لِفُرُوجِهِمْ				
बेशक	अज़ाब	उनके रब का	नहीं है	बेख़ौफ़ होने की चीज़	और वो जो	वो	अपनी शर्मगाहों की
حِفْظُونَ ㉙	إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ	أَوْ مَا	مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ				
हिफ़ाज़त करने वाले हैं	सिवाय	अपनी बीवियों के	या	जिनके	मालिक हुए	दाएँ हाथ उनके	
فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ㉚	فَمِنْ ابْتِغَىٰ	وَرَاءَ ذَٰلِكَ	فَأُولَٰئِكَ				
तो बेशक वो	नहीं	मलामत किए जाने वाले	फिर जो कोई	तलाश करे	अलावा	उसके	तो यही लोग हैं
هُمْ الْعُدُونَ ㉛	وَالَّذِينَ هُمْ	لِأَمْنَتِهِمْ	وَعَهْدِهِمْ	رُعُونَ ㉜			
वो	जो हद से बढ़ने वाले हैं	और वो जो	वो	अपनी अमानतों की	और अपने वादों की	निगरानी करने वाले हैं	
وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ	قَائِمُونَ ㉝	وَالَّذِينَ هُمْ	عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ				
और वो जो	वो	अपनी गवाहियों पर	क्रायम रहने वाले हैं	और वो जो	वो	अपनी नमाज़ों की	

يُحَافِظُونَ ٣٤ ط	أُولَٰئِكَ	فِي جَنَّتٍ	مُّكْرَمُونَ ٣٥ ط	فَبَالَ	الَّذِينَ
वो हिफाज़त करते हैं	यही लोग हैं	बाग़ों में	इज़ज़त दिए जाने वाले	तो क्या है	उन्हें जिन्होंने
كَفَرُوا	قَبْلَكَ	مُهْطِعِينَ ٣٦ لا	عَنِ الْيَمِينِ	وَعَنِ الشِّمَالِ	عَزِيزِينَ ٣٧
कुफ़ किया	आपकी तरफ़	दौड़ते चले आने वाले हैं	दाएँ तरफ़ से	और बाएँ तरफ़ से	गिरोह दर गिरोह
أَيُّطَعُ	كُلُّ	أَمْرٍ	مِنْهُمْ	أَنْ	يُدْخَلَ
क्या तमाअ रखता है	हर	शख्स	उनमें से	कि	वो दाख़िल किया जाएगा
جَنَّةَ	نَعِيمٍ ٣٨ لا	كَلَّا ط	إِنَّا	خَلَقْنَاهُمْ	مِمَّا يَعْلَمُونَ ٣٩
हरगिज़ नहीं	नेअमतों वाली	जन्नत में	मैं कसम खाता हूँ	पस नहीं	वो जानते हैं
وَالْمَغْرِبِ	إِنَّا	لَقَادِرُونَ ٤٠ لا	عَلَى	أَنْ	نُبَدِّلَ
और मगरिबों के	बेशक हम	अलबत्ता क़ादिर हैं	उस पर	कि	हम बदल दें
وَمَا	نَحْنُ	بَسْبُوقِينَ ٤١	فَذَرُهُمْ	يَخُوضُوا	وَيَلْعَبُوا
और नहीं	हम	नाकाम होने वाले	तो छोड़ दीजिए उन्हें	वो बहस-मुबाहि़सा करें	और वो खेलते रहें
حَتَّىٰ	يُلْقُوا	يَوْمَهُمُ	الَّذِي	يُوعَدُونَ ٤٢ لا	يَوْمَ
यहां तक कि	वो जा मिलें	अपने उस दिन को	वो जो	वो वादा किए जाते हैं	जिस दिन
مِنَ الْجَدَاثِ	سِرَاعًا	كَأَنَّهُمْ	إِلَىٰ نُصْبٍ	يُوفَضُونَ ٤٣ لا	خَاشِعَةً
क़ब्रों से	दौड़ते हुए	गोया कि वो	तरफ़ आसतानों के	वो दौड़ते हैं	झुकी हुई होंगी
أَبْصَارُهُمْ	تَرَهَقُهُمْ	ذَلَّةٌ ٤٤ ط	ذَلِكَ	الْيَوْمِ	الَّذِي
निगाहें उनकी	छा रही होगी उन पर	ज़िल्लत	ये है	दिन	जिसका

إِنَّا	أَرْسَلْنَا	نُوحًا	إِلَى قَوْمِهِ	أَنْ	أَنْذِرُ قَوْمَكَ	مِنْ قَبْلِ	
बेशक हम	भेजा हमने	नूह को	तरफ उसकी क्रौम के	कि	डराओ	अपनी क्रौम को	इससे कब्ल
أَنْ	يَأْتِيَهُمْ	عَذَابٌ	أَلِيمٌ ①	قَالَ	يُقَوْمٌ	إِنِّي	لَكُمْ
कि	आए उनके पास	अज़ाब	दर्दनाक	उसने कहा	ऐ मेरी क्रौम	बेशक मैं	तुम्हारे लिए
نَذِيرٌ	مُبِينٌ ②	أَنْ	اعْبُدُوا	اللَّهُ	وَاتَّقُوهُ	وَاطِيعُونَ ③	
डराने वाला हूं	खुल्लम-खुल्ला	ये कि	इबादत करो	अल्लाह की	और डरो उससे	और इताअत करो मेरी	
يَغْفِرُ	لَكُمْ	مِنْ ذُنُوبِكُمْ	وَيُؤَخِّرَكُمْ	إِلَى أَجَلٍ	مُسَيِّطٌ		
वो बख्श देगा	तुम्हारे लिए	तुम्हारे गुनाहों को	और मोहलत देगा तुम्हें	एक वक़्त तक	जो मुकर्रर है		
إِنَّ	أَجَلَ	اللَّهِ	إِذَا	جَاءَ	لَا يُؤَخِّرُ	لَوْ	كُنْتُمْ
बेशक	मुकर्रर करदा वक़्त	अल्लाह का	जब	वो आ जाता है	तो नहीं मुअख़्खर किया जाता	अगर	हो तुम
تَعْلَمُونَ ④	قَالَ	رَبِّ	إِنِّي	دَعَوْتُ	قَوْمِي	لَيْلًا	وَنَهَارًا ⑤
तुम जानते	उसने कहा	ऐ मेरे रब	बेशक मैं	पुकारा मैंने	अपनी क्रौम को	रात	और दिन
فَلَمْ	يَزِدْهُمْ	دُعَائِي	إِلَّا	فِرَارًا ⑥	وَإِنِّي	كُلَّمَا	دَعَوْتُهُمْ
तो ना	ज़्यादा किया उन्हें	मेरी पुकार ने	मगर	फ़रार में	और बेशक मैं	जब कभी	पुकारा मैंने उन्हें
لِتَغْفِرَ	لَهُمْ	جَعَلُوا	أَصَابِعَهُمْ	فِي أَذَانِهِمْ	وَاسْتَغْشَوْا		
ताकि तू बख़्श दे	उन्हें	उन्होंने डाल लीं	उंगलियां अपनी	अपने कानों में	और उन्होंने ढांप लिए		
ثِيَابَهُمْ	وَاصْرَوْا	وَاسْتَكْبَرُوا	اسْتِكْبَارًا ⑦	ثُمَّ	إِنِّي	دَعَوْتُهُمْ	
कपड़े अपने	और उन्होंने इसरार किया	और उन्होंने तकब्वुर किया	तकब्वुर करना	फिर	बेशक मैं	पुकारा मैंने उन्हें	
جِهَارًا ⑧	ثُمَّ	إِنِّي	أَعْلَنْتُ لَهُمْ	وَاسْرَرْتُ لَهُمْ	إِسْرَارًا ⑨		
बाआवाज़ बुलंद	फिर	बेशक मैं	ऐलानिया कहा मैंने	उन्हें	और राज़दाराना बात की मैंने	उन्हें	राज़दाराना तौर पर

فَقُلْتُ	اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ط	إِنَّهُ	كَانَ	غَفَّارًا ⑩	يُرْسِلُ
फिर कहा मैंने	बढ़िश्श मांगो	अपने रब से	बेशक वो	है	बहुत बड़्शने वाला
السَّمَاءِ	عَلَيْكُمْ	مَدْرَارًا ⑪	وَيُسَدِّدُكُمْ	بِأَمْوَالٍ	وَبَنِينَ
आसमान को	तुम पर	खूब बरसने वाला	और वो मदद करेगा तुम्हारी	साथ मालों	और बेटों के
وَيَجْعَلُ	لَكُمْ	جَنَّتٍ	وَيَجْعَلُ	لَكُمْ	أَنْهَرًا ⑫
और वो बनाएगा	तुम्हारे लिए	बागात	और वो बनाएगा	तुम्हारे लिए	नहरें
لَا تَرْجُونَ	لِلَّهِ	وَقَارًا ⑬	وَقَدْ	خَلَقَكُمْ	أَطْوَارًا ⑭
नहीं तुम तबक्को रखते	अल्लाह के लिए	किसी बक्रार/अज़मत की	और तहक़ीक़	उसने पैदा किया तुम्हें	सुख्तलिफ़ मरहलों में
تَرَوْا	كَيْفَ	خَلَقَ	اللَّهُ	سَبْعَ	سَبُوتٍ
तुमने देखा	किस तरह	पैदा किया	अल्लाह ने	सात	आसमानों को
الْقَمَرَ	فِيهِنَّ	نُورًا	وَجَعَلَ	الشَّمْسَ	سِرَاجًا ⑮
चांद को	उनमें	नूर	और उसने बनाया	सूरज को	चिराग़
أَنْبَتَكُمْ	مِّنَ الْأَرْضِ	نَبَاتًا ⑯	ثُمَّ	يُعِيدُكُمْ	فِيهَا
उसने उगाया तुम्हें	ज़मीन से	उगाना	फिर	वो एआदा करेगा तुम्हारा	उसमें
إِخْرَاجًا ⑰	وَاللَّهُ	جَعَلَ	لَكُمْ	الْأَرْضَ	بِسَاطًا ⑱
निकालना	और अल्लाह	उसने बनाया	तुम्हारे लिए	ज़मीन को	बिछौना
مِنْهَا	سُبُلًا	فَجَاجًا ⑲	قَالَ	نُوحٌ	رَّبِّ
उसके	रास्तों में	जो कुशादा हैं	कहा	नूह ने	ऐ मेरे रब
وَاتَّبَعُوا	مَنْ	لَّمْ	يَزِدْهُ	مَالُهُ	وَوَلَدَهُ
और उन्होंने पैरवी की	उसकी जो	नहीं	ज़्यादा किया जिसे	उसके माल ने	और उसकी औलाद ने
خَسَارًا ⑳	إِلَّا	خَسَارًا ㉑			
ख़सारे में	मगर				

وَمَكْرُؤًا	مَكْرًا	كُبَارًا 22	وَقَالُوا	لَا تَذَرُنَّ	الْهَتَكُمُ	وَلَا
और उन्होंने चाल चली	एक चाल	बहुत बड़ी	और उन्होंने कहा	हरगिज़ ना तुम छोड़ो	अपने इलाहों को	और ना
تَذَرُنَّ	وَدًّا	وَلَا	سُوءًا 23	وَلَا	يَغُوثَ	وَيَعُوقَ
तुम हरगिज़ छोड़ो	वद्द/वद्	और ना	सुवाअ को	और ना	यगूस	यऊक और
وَقَدْ	أَضَلُّوْا	كَثِيرًا 24	وَلَا	تَزِدِ	الظَّالِمِينَ	إِلَّا
और तहक़ीक़	उन्होंने भटका दिया	कसीर तादाद को	और ना	तू ज़्यादा कर	ज़ालिमों को	मगर
مِمَّا	خَطِئْتَهُمْ	أَغْرَقُوا	فَادْخُلُوا	نَارًا 25	فَلَمْ	يَجِدُوا لَهُمْ
बवजह	अपनी ख़ताओं के	वो मर्क़ किए गए	फिर वो दाख़िल किए गए	आग में	फिर ना	उन्होंने पाया
مِّنْ دُونِ	اللّٰهِ	أَنْصَارًا 26	وَقَالَ	نُوحٌ	رَّبِّ	لَا تَذَرْ
सिवाए	अल्लाह के	कोई मददगार	और कहा	नूह ने	ऐ मेरे रब	ना तू छोड़
عَلَى الْأَرْضِ	مِنَ الْكَافِرِينَ	دَيَّارًا 27	إِنَّكَ	إِنْ	تَذَرُهُمْ	يُضِلُّوْا
ज़मीन पर	काफ़िरों में से	कोई बसने वाला	बेशक तू	अगर	तू छोड़ देगा उन्हें	वो भटका देंगे
عِبَادَكَ	وَلَا	يَلِدُوْا	إِلَّا	فَاجِرًا	كَفَّارًا 28	رَّبِّ
तेरे बंदों को	और ना	वो जन्म देंगे	मगर	फ़ाजिर को	सख़्त मुनकर को	ऐ मेरे रब
لِي	وَلِوَالِدَيَّ	وَلِسَنٍ	دَخَلَ	بَيْتِي	مُؤْمِنًا	وَلِلْمُؤْمِنِينَ
मुझे	और मेरे वालिदैन को	और उसे भी जो	दाख़िल हो	मेरे घर में	ईमान ला कर	और मोमिन मर्दों को
وَالْمُؤْمِنَاتِ 29	وَلَا	تَزِدِ	الظَّالِمِينَ	إِلَّا	تَبَارًا 30	
और मोमिन औरतों को	और ना	तू ज़्यादा कर	ज़ालिमों को	मगर	हलाकत में	

قُلْ	أُوحِيَ	إِلَيَّ	أَنَّهُ	اسْتَمَعَ	نَفَرٌ	مِّنَ الْجِنِّ	فَقَالُوا
कह दीजिए	वही की गई	मेरी तरफ़	बेशक वो	ग़ौर से सुना	एक गिरोह ने	जिन्नों में से	तो उन्होंने कहा
إِنَّا	سَمِعْنَا	قُرْآنًا	عَجَبًا ①	يَهْدِي	إِلَى الرُّشْدِ	فَأَمَّا	
बेशक हम	सुना हमने	कुरआन	अजीब	वो रहनुमाई करता है	तरफ़ भलाई के	पस ईमान लाए हम	
بِهِ ٥	وَلَكِنْ	نُشْرِكَ	بِرَبِّنَا	أَحَدًا ②	وَأَنَّهُ	تَعْلَى	جَدُّ
उस पर	और हरगिज़ नहीं	हम शरीक करेंगे	साथ अपने रब के	किसी एक को	और ये कि	बहुत बुलंद है	शान
رَبِّنَا	مَا	اتَّخَذَ	صَاحِبَةً	وَلَا	وَلَدًا ③	وَأَنَّهُ	كَانَ
हमारे रब की	नहीं	बनाई उसने	कोई बीवी	और ना	कोई औलाद	और ये कि	थे
يَقُولُ	سَفِيهًا	عَلَى اللَّهِ	شَطَطًا ④	وَأَنَّا	ظَنَنَّا	أَنْ	
कहा करते	बेवकूफ़ हमारे	अल्लाह पर	ज़्यादती की बातें	और बेशक हम	गुमान किया हमने	कि	
لَنْ	تَقُولَ	الْإِنْسُ	وَالْجِنُّ	عَلَى اللَّهِ	كَذِبًا ⑤	وَأَنَّهُ	كَانَ
हरगिज़ नहीं	कहेंगे	इन्सान	और जिन्न	अल्लाह पर	कोई झूठ	और बेशक वो	थे
رِجَالٌ	مِّنَ الْإِنْسِ	يَعُودُونَ	بِرِجَالٍ	مِّنَ الْجِنِّ	فَزَادُوهُمْ		
कुछ लोग	इंसानों में से	जो पनाह लेते थे	कुछ लोगों की	जिन्नों में से	तो उन्होंने ज़्यादा कर दिया उन्हें		
رَهَقًا ⑥	وَأَنَّهُمْ	ظَنُّوا	كَمَا	ظَنَنْتُمْ	أَنْ	لَّنْ	يَبْعَثَ
सरकशी में	और ये कि वो	वो समझते थे	जैसा कि	समझा तुमने	कि	हरगिज़ नहीं	भेजेगा
اللَّهُ	أَحَدًا ⑦	وَأَنَّا	لَبَسْنَا	السَّيِّئَ	فَوَجَدْنَاهَا	مُلِئَتْ	
अल्लाह	किसी एक को	और बेशक हम	छुआ हमने	आसमान को	तो पाया हमने उसे	भरा हुआ है	
حَرَسًا	شَدِيدًا	وَشُهَبًا ⑧	وَأَنَّا	كُنَّا	نَقْعُدُ	مِنْهَا	
पहरेदारों से	सख़्त	और शोलों से	और बेशक हम	थे हम	हम बैठते	उसकी	

مَقَاعِدَ	لِلسَّعِطِ ط	فَمَنْ	يَسْتَبِيعُ	الْآنَ	يَجِدُ	لَهُ	شَهَابًا
बैठने की जगहों पर	सुनने के लिए	तो जो कोई	शौर से सुनता है	अब	वो पाता है	अपने लिए	एक शोला
رَّصَدًا ٩	وَأَنَا	لَا نَذَرِي	أَشْرُ	أُرِيدُ	بِسْنِ	فِي الْأَرْضِ	
घात में	और बेशक हम	नहीं हम जानते	क्या शर/बुराई का	इरादा किया गया	साथ उनके जो	जमीन में है	
أَمْ	أَرَادَ بِهِمْ	رَبُّهُمْ	رَشَدًا ١٠	وَأَنَا	مِنَّا	الصَّالِحُونَ	
या	इरादा किया	साथ उनके	उनके रब ने	ख़ैर/भलाई का	और बेशक हम	हम में से	नेक हैं
وَمِنَّا	دُونَ	ذَلِكَ ط	كُنَّا	طَرَائِقَ	قِدَادًا ١١	وَأَنَا	ظَنَنَّا
और हम में से	अलावा हैं	उसके	हैं हम	तरीकों पर	मुख्तलिफ़	और बेशक हम	यक़ीन रखते हैं हम
أَنْ	لَنْ	نُعْجِزَ	اللَّهُ	فِي الْأَرْضِ	وَلَنْ	نُعْجِزَهُ	هَرَبًا ١٢
कि	हरगिज़ नहीं	हम आजिज़ कर सकते	अल्लाह को	जमीन में	और हरगिज़ नहीं	हम आजिज़ कर सकते उसे	भाग कर
وَأَنَا	لَبَّا	سَبْعَنَا	الْهُدَى	أَمَّنَّا	بِهِ ط	فَمَنْ	يُؤْمِنُ
और बेशक हम	जब	सुना हमने	हिदायत को	ईमान ले आए हम	उस पर	पस जो कोई	ईमान लाएगा
بِرَبِّهِ	فَلَا	يَخَافُ	بَخْسًا	وَلَا	رَهَقًا ١٣	وَأَنَا	مِنَّا
अपने रब पर	तो ना	वो डरेगा	किसी कमी से	और ना	किसी ज़्यादादी से	और बेशक हम	हम में से कुछ
الْمُسْلِمُونَ	وَمِنَّا	الْقِسْطُونَ ط	فَمَنْ	أَسْلَمَ	فَأُولَئِكَ	تَحَرَّوْا	
मुसलमान हैं	और हम में से कुछ	ज़ालिम हैं	तो जो कोई	फ़रमांवरदार हो गया	तो यही लोग हैं	उन्होंने इरादा किया	
رَشَدًا ١٤	وَأَمَّا	الْقِسْطُونَ	فَكَانُوا	لِجَهَنَّمَ	حَطَبًا ١٥	وَأَنْ	
भलाई का	और रहे	ज़ालिम लोग	तो हैं वो	जहन्नम का	ईंधन	और ये कि	
لَوْ	اسْتَقَامُوا	عَلَى الطَّرِيقَةِ	لَأَسْقَيْنَهُمْ	مَاءً	غَدَقًا ١٦		
अगर	वो क़ायम हो जाते	रास्ते पर	अलबत्ता पिलाते हम उन्हें	पानी	वाफ़िर		

لَنْفَتْنَهُمْ	فِيهِ ^ط	وَمَنْ	يُعْرِضُ	عَنْ ذِكْرِ	رَبِّهِ	يَسْأَلُكَ
ताकि हम	उसमें	और जो कोई	ऐराज़ करेगा	ज़िक्र से	अपने रब के	वो दाख़िल करेगा उसे
عَذَابًا	صَعَدًا ¹⁷	وَأَنَّ	الْمَسْجِدَ	لِلَّهِ	فَلَا	تَدْعُوا
अज़ाब में	सख़्त	और बेशक	मस्जिदें	अल्लाह के लिए हैं	पस ना	तुम पुकारो
اللَّهُ	أَحَدًا ¹⁸	وَأَنَّهُ	لَبَّأ	قَامَ	عَبْدُ	اللَّهُ
अल्लाह के	किसी एक को	और बेशक वो	जब	खड़ा हुआ	बंदा	अल्लाह का
كَادُوا	يَكُونُونَ	عَلَيْهِ	لِبَدَا ¹⁹	قُلْ	إِنِّبَا	أَدْعُوا
क़रीब थे वो	कि वो हो जाएँ	उस पर	गिरोह-दर-गिरोह (हमला आवर)	कह दीजिए	बेशक	मैं पुकारता हूँ
وَلَا	أُشْرِكُ	بِهِ	أَحَدًا ²⁰	قُلْ	إِنِّي	لَا أَمْلِكُ
और नहीं	मैं शरीक ठहराता	साथ उसके	किसी एक को	कह दीजिए	बेशक मैं	नहीं मैं मालिक हो सकता
ضَرًّا	وَلَا	رَشْدًا ²¹	قُلْ	إِنِّي	لَنْ	يُجِيرَنِي
किसी नुक़सान का	और ना	किसी भलाई का	कह दीजिए	बेशक मैं	हरगिज़ ना	पनाह देगा मुझे
أَحَدٌ ²²	وَلَنْ	أَجِدَ	مِنْ دُونِهِ	مُلْتَحِدًا ²²	إِلَّا	بَلَاغًا
कोई एक	और हरगिज़ ना	मैं पाऊंगा	उसके सिवा	कोई जाय पनाह	मगर	पहुंचा देना है
مِّنَ اللَّهِ	وَرِسَالَتِهِ ^ط	وَمَنْ	يَعْصِ	اللَّهُ	وَرَسُولُهُ	فَإِنَّ
अल्लाह की	और उसके पैग़ामात	और जो कोई	नाफ़रमानी करेगा	अल्लाह की	और उसके रसूल की	तो बेशक
لَهُ	نَارَ	جَهَنَّمَ	خَلِيدِينَ	فِيهَا	أَبَدًا ²³	حَتَّى
उसके लिए	आग है	जहन्नम की	हमेशा रहने वाले हैं	उसमें	हमेशा-हमेशा	यहां तक कि
رَأَوْا	مَا	يُوعَدُونَ	فَسَيَعْلَمُونَ	مَنْ	أَضْعَفُ	نَاصِرًا
वो देखेंगे	उसे जो	वो वादा किए जाते हैं	तो अनक़रीब वो जान लेंगे	कौन	ज़्यादा कमज़ोर है	मददगार के ऐतबार से

وَأَقَلُّ	عَدَدًا 24	قُلْ	إِنْ	أَدْرِئِي	أَقْرَبُ	مَا
और कौन ज़्यादा कम है	तादाद के ऐतबार से	कह दीजिए	नहीं	मैं जानता	क्या करीब है	वो जो

تُوعَدُونَ	أَمْ	يَجْعَلُ	لَهُ	رَبِّي	أَمَدًا 25	عِلْمُ	الْغَيْبِ
तुम वादा किए जाते हो	या	मुकर्रर कर देगा	उसके लिए	मेरा रब	कोई मुद्दत	जानने वाला है	ग़ैब का

فَلَا	يُظْهِرُ	عَلَى غَيْبِهِ	أَحَدًا 26	إِلَّا	مَنْ	ارْتَضَى
पस नहीं	वो ज़ाहिर करता	अपने ग़ैब पर	किसी एक को	मगर	जिसे	वो पसंद करे

مِنْ رَسُولٍ	فَإِنَّهُ	يَسْلُكُ	مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ	وَمِنْ خَلْفِهِ
कोई रसूल	पस बेशक वो	वो लगा देता है	उसके आगे	और उसके पीछे

رَصَدًا 27	لِيَعْلَمَ	أَنْ	قَدْ	أَبْلَغُوا	رِسَلَتِ	رَبِّهِمْ
मुहाफ़िज़	ताकि वो जान ले	कि	तहकीक	उन्होंने पहुंचा दिए	पैसामात	अपने रब के

وَأَحَاطَ	بِمَا	لَدَيْهِمْ	وَاحْطَى	كُلَّ	شَيْءٍ	عَدَدًا 28
और उसने घेर रखा है	उनको जो	उनके पास है	और उसने शुमार कर रखा है	हर	चीज़ को	अदद के ऐतबार से

آيَاتُهَا: 20	سُورَةُ الْمُرَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ 3	رُكُوعَاتُهَا: 2
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ		

يَا أَيُّهَا	الْمُرَّمِّلُ 1	قُمْ	الَّيْلَ	إِلَّا	قَلِيلًا 2	نِصْفَهُ	أَوْ
ऐ	कपड़े में लिपटने वाले	क्रियाम कीजिए	रात को	मगर	कम	आधा उसका	या

انْقُصْ	مِنْهُ	قَلِيلًا 3	أَوْ	زِدْ	عَلَيْهِ	وَرَتِّلْ	الْقُرْآنَ
कम कर लीजिए	उससे	थोड़ा सा	या	ज़्यादा बढ़ा दीजिए	उस पर	और ठहर-ठहर कर पढ़िए	कुरआन को

تَرْتِيلاً 4	إِنَّا	سَنُلْقِيْ	عَلَيْكَ	قَوْلًا	ثَقِيلًا 5	إِنَّ
ठहर-ठहर कर पढ़ना	बेशक हम	अनकरीब हम डालेंगे	आप पर	एक बात/कौल	बहुत भारी	बेशक

نَاشِئَةً	الَّيْلِ	هِيَ	أَشَدُّ	وَطًا	وَأَقْوَمُ	قِيلًا ⑥	إِنَّ
उठना	रात का	वो	ज़्यादा सख्त है	(नफ़स को) रौंदने में	और ज़्यादा दुरुस्त है	बात करने में	बेशक
لَكَ	فِي النَّهَارِ	سَبَحًا	طَوِيلًا ⑦	وَادْكُرْ	اسْمَ	رَبِّكَ	
आपके लिए	दिन में	मसरूफ़ियत है	तवील	और ज़िक्र कीजिए	नाम	अपने रब का	
وَتَبَتَّلْ	إِلَيْهِ	تَبَتُّلًا ⑧	رَبُّ	الْمَشْرِقِ	وَالْمَغْرِبِ	لَا	
और सबसे अलग हो कर मुतावज्जह हो जाइए	उसकी तरफ़	मुतावज्जह होना	रब	मशरिक का	और मगरिब का	नहीं	
إِلَهَ	إِلَّا	هُوَ	فَاتَّخِذْهُ	وَكَيْلًا ⑨	وَاصْبِرْ	عَلَى	مَا
कोई इलाह(बरहक)	मगर	वो ही	पस बना लीजिए उसे	कारसाज़	और सब्र कीजिए	उस पर	जो
يَقُولُونَ	وَاهْجُرْهُمْ	هَجْرًا	جَمِيلًا ⑩	وَذَرْنِي	وَالْبُكَدِّبِينَ		
वो कहते हैं	और छोड़ दीजिए उन्हें	छोड़ना	खूबसूरत (अंदाज़ में)	और छोड़ दीजिए मुझे	और झुठलाने वालों को		
أُولَى النَّعْمَةِ	وَمَهْلَهُمْ	قَلِيلًا ⑪	إِنَّ	لَدَيْنَا	أَنْكَالًا	وَجَحِيمًا ⑫	
जो नेअमतों वाले हैं	और ढील दीजिए उन्हें	थोड़ी सी	बेशक	हमारे पास	बेड़ियां हैं	और भड़कती आग	
وَطَعَامًا	ذَاغَصَةٍ	وَعَذَابًا	أَلِيمًا ⑬	يَوْمَ	تَرْجُفُ	الْأَرْضُ	
और खाना	गले में अटकने वाला	और अज़ाब	दर्दनाक	जिस दिन	कांपेगी	ज़मीन	
وَالْجِبَالُ	وَكَانَتْ	الْجِبَالُ	كَثِيبًا	مَهِيلًا ⑭	إِنَّا	أَرْسَلْنَا	
और पहाड़	और होंगे	पहाड़	रेत के टीले	बिखरे हुए	बेशक हम	भेजा हमने	
إِلَيْكُمْ	رَسُولًا ⑮	شَاهِدًا	عَلَيْكُمْ	كَمَا	أَرْسَلْنَا	إِلَىٰ فِرْعَوْنَ	
तरफ़ तुम्हारे	एक रसूल	गवाह	तुम पर	जैसा कि	भेजा हमने	तरफ़ फ़िरऔन के	
رَسُولًا ⑮	فَعَصَى	فِرْعَوْنُ	الرَّسُولَ	فَاخَذْنَاهُ	أَخَذًا	وَبَيْلًا ⑯	
एक रसूल	तो नाफ़रमानी की	फ़िरऔन ने	रसूल की	तो पकड़ लिया हमने उसे	पकड़ना	सख्त	

فَكَيْفَ	تَتَّقُونَ	إِنْ	كَفَرْتُمْ	يَوْمًا	يَجْعَلُ	الْوِلْدَانَ
तो किस तरह	तुम बचोगे	अगर	कुफ़ किया तुमने	उस दिन से	जो कर देगा	बच्चों को
شَيْبًا ¹⁷	السَّهَاءُ	مُنْفِطْرًا	بِهِ ^ط	كَانَ	وَعْدُهُ	مَفْعُولًا ¹⁸
बूढ़ा	आसमान	फट जाने वाला होगा	उसमें	है	वादा उसका	होकर रहने वाला
إِنَّ	هَذِهِ	تَذَكْرَةٌ ^ه	فَمَنْ	شَاءَ	اتَّخَذَ	إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ¹⁹
बेशक	ये	एक नसीहत है	पस जो कोई	चाहे	बना ले	तरफ़ अपने रब के
إِنَّ	رَبَّكَ	يَعْلَمُ	أَنَّكَ	تَقُومُ	أَدْنَىٰ	مِنْ ثُلُثِي
बेशक	रब आपका	वो जानता है	बेशक आप	आप क्रियाम करते हैं	क़रीब	दो तिहाई
وَنِصْفَهُ	وَتُلُثَّهُ	وَطَائِفَةً	مِّنَ الَّذِينَ	مَعَكَ ^ط	وَاللَّهُ	
और (कभी) निस्फ़ उसका	और एक तिहाई उसका	और एक गिरोह	उन लोगों में से जो	आपके साथ हैं	और अल्लाह	
يُقَدِّرُ	الَّيْلَ	وَالنَّهَارَ ^ط	عِلْمَ	أَنْ	لَّنْ	تُحْصَوْهُ
वो अंदाज़ा रखता है	रात का	और दिन का	वो जानता है	कि	हरगिज़ ना	तुम शुमार कर सकोगे उसे
عَلَيْكُمْ	فَاقْرَءُوا	مَا	تَيَسَّرَ	مِنَ الْقُرْآنِ ^ط	عِلْمَ	أَنْ
तुम पर	पस पढ़ो	जो	मयस्सर आए	कुरआन में से	वो जानता है	कि
مِنْكُمْ	مَّرْضًى ^ل	وَآخَرُونَ	يَضْرِبُونَ	فِي الْأَرْضِ	يَبْتَغُونَ	
तुम में	बीमार	और कुछ दूसरे	जो सफ़र करते हैं	ज़मीन में	वो तलाश करते होंगे	
مِنْ فَضْلِ	اللَّهِ ^ل	وَآخَرُونَ	يُقَاتِلُونَ	فِي سَبِيلِ اللَّهِ ^ص	فَاقْرَءُوا	
फ़ज़ल में से	अल्लाह के	और कुछ दूसरे	जो जंग करते होंगे	अल्लाह के रास्ते में	पस पढ़ो	
مَا	تَيَسَّرَ	مِنْهُ ^ل	وَاقْبِئُوا	الصَّلَاةَ	وَاتُوا	الزَّكَاةَ
जो	मयस्सर आए	उसमें से	और क़ायम करो	नमाज़	और अदा करो	ज़कात
						और कर्ज़ दो

اللّٰهُ	قَرَضًا	حَسَنًا ط	وَمَا	تُقَدِّمُوا	لِأَنْفُسِكُمْ	مِّنْ خَيْرٍ
अल्लाह को	कर्ज़	अच्छा	और जो	तुम आगे भेजोगे	अपने नफ़्सों के लिए	कोई भलाई

تَجِدُوهُ	عِنْدَ	اللّٰهِ	هُوَ	خَيْرًا	وَأَعْظَمَ	أَجْرًا ط
तुम पा लोगे उसे	पास	अल्लाह के	वो	बेहतर है	और ज़्यादा बड़ा है	अजर में

وَأَسْتَغْفِرُوا	اللّٰهُ ط	إِنَّ	اللّٰهُ	غَفُورٌ	رَّحِيمٌ ع	٢٠
और बख़्शिश माँगो	अल्लाह से	बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	

آيَاتُهَا: 56	سُورَةُ الْبُدْثَرِ مَكِّيَّةٌ 4	رُكُوعَاتُهَا: 2
---------------	----------------------------------	------------------

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
--

يَا أَيُّهَا	الْبُدْثَرُ ١	قُمْ	فَانْذِرْ ٢	وَرَبِّكَ	فَكَبِّرْ ٣
ऐ	कपड़ा लपेटने वाले	खड़े हो जाइए	फिर डराइए	और अपने रब की	पस बड़ाई बयान कीजिए

وَثِيَابَكَ	فَطَهِّرْ ٤	وَالرُّجْزَ	فَاهْجُرْ ٥	وَلَا	تَنْنُ	تَسْتَكْبِرْ ٦
और अपने कपड़े	पस पाक रखिए	और गन्दगी को	पस छोड़ दीजिए	और ना	आप एहसान कीजिए	कि आप ज़्यादा हासिल कर सकें

وَلِرَبِّكَ	فَاصْبِرْ ٧	فَإِذَا	نُقِرَ	فِي النَّاقُورِ ٨	فَذَلِكِ	يَوْمَئِذٍ
और अपने रब के लिए	पस सब्र कीजिए	फिर जब	फूँका जाएगा	सूर में	तो वो	उस दिन

يَوْمٌ	عَسِيرٌ ٩	عَلَى الْكَافِرِينَ	غَيْرُ	يَسِيرٍ ١٠	ذَرْنِي	وَمَنْ
दिन होगा	सख़्त दुश्वार	काफ़िरों पर	ना होगा	आसान	छोड़ दो मुझे	और जिसे

خَلَقْتُ	وَحِيدًا ١١	وَجَعَلْتُ	لَهُ	مَالًا	مَّهْدُودًا ١٢	وَابْنَيْنِ
पैदा किया मैंने	अकेले	और बनाया मैंने	उसके लिए	माल	लम्बा चौड़ा	और बेटे

شُهُودًا ١٣	وَمَهَّدْتُ	لَهُ	تَهْيِئًا ١٤	ثُمَّ	يَطْعُ	أَنْ
हाज़िर रहने वाले	और फैलाया मैंने	उसके लिए	फैलाना	फिर	वो तमाअ रखता है	कि

أَزِيدَ 15	كَلَّا ط	إِنَّهُ	كَانَ	لَا يُتِنَا	عَنِدًا ط 16	سَارُهُقُهُ
मैं ज़्यादा दूँ	हरगिज़ नहीं	बेशक वो	है	हमारी आयात से	सख़्त इनाद रखने वाला	अनकरीब मैं चढ़ाऊंगा उसे
صَعُودًا ط 17	إِنَّهُ	فَكَرَّرَ	وَقَدَّرَ 18	فَقُتِلَ	كَيْفَ	قَدَّرَ 19
कठिन चढ़ाई	बेशक वो	उसने सोचा	और उसने अंदाज़ा किया	पस वो मारा जाए	कैसा	उसने अंदाज़ा किया
ثُمَّ قُتِلَ	كَيْفَ	قَدَّرَ 20	ثُمَّ	نَظَرَ 21	ثُمَّ	عَبَسَ
फिर	कैसा	उसने अंदाज़ा किया	फिर	उसने देखा	फिर	उसने तेवरी चढ़ाई
وَبَسَرَ 22	ثُمَّ	أَدْبَرَ	وَأَسْتَكْبَرَ 23	فَقَالَ	إِنْ هَذَا	إِلَّا سِحْرٌ
और उसने मुंह बिसूरा	फिर	उसने पीठ फेरी	और उसने तकबुर किया	फिर उसने कहा	नहीं है	ये मगर जादू
يُؤْثَرُ 24	إِنْ هَذَا	إِلَّا	قَوْلُ	الْبَشَرِ ط 25	سَاصِلِيهِ	سَقَرٌ 26
जो नक्कल किया जाता है	नहीं है	ये	मगर	बात	एक इंसान की	अनकरीब मैं झोंकूंगा उसे
وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ط 27	لَا تُبْقِي	وَلَا	تَذَرُ 28	لَوَّاحَةٌ	وَمَا	لِلْبَشَرِ ط 29
और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है	दोज़ख़	ना वो बाक़ी रखेगी	और ना	वो छोड़ेगी
لِلْبَشَرِ ط 29	عَلَيْهَا	تِسْعَةَ عَشَرَ ط 30	وَمَا	جَعَلْنَا	أَصْحَبَ النَّارِ	لِلَّذِينَ
चमड़े को	उस पर हैं	उत्तीस (फ़रिशते)	और नहीं	बनाया हमने	निगरान	आग के
إِلَّا مَلِكَةً ص	وَمَا	جَعَلْنَا	عَدَّتْهُمْ	إِلَّا	فِتْنَةً	لِلَّذِينَ
मगर	फ़रिशते	और नहीं	बनाया हमने	उनकी तादाद को	मगर	एक फ़ितना
كَفَرُوا 31	لَيَسْتَيَقِنَ	الَّذِينَ	أُوتُوا	الْكِتَابَ	وَيَزِدَادَ	الَّذِينَ
कुफ़्र किया	ताकि यक़ीन कर लें	वो जो	दिए गए	किताब	और ज़्यादा हो जाएँ	वो जो
أَمْنًا	إِيمَانًا	وَلَا	يَرْتَابَ	الَّذِينَ	أُوتُوا	الْكِتَابَ
ईमान लाए	ईमान में	और ना	शक करें	वो जो	दिए गए	किताब
						और मोमिन

وَلَيَقُولَ	الَّذِينَ	فِي قُلُوبِهِمْ	مَّرَضٌ	وَالْكَافِرُونَ	مَاذَا	أَرَادَ
और ताकि कहें	वो लोग	जिनके दिलों में	बीमारी है	और काफ़िर	क्या कुछ	इरादा किया
اللَّهُ	بِهَذَا	مَثَلًا	كَذَلِكَ	يُضِلُّ	اللَّهُ	مَنْ
अल्लाह ने	साथ इस	मिसाल के	इसी तरह	भटका देता है	अल्लाह	जिसे
وَيَهْدِي	مَنْ	يَشَاءُ	وَمَا	يَعْلَمُ	جُنُودَ	رَبِّكَ
और वो	जिसे	वो चाहता है	और नहीं	जानता	लश्करों को	आपके रब के
وَمَا	هِيَ	إِلَّا	ذِكْرًا	لِلْبَشَرِ	كَلَّا	وَاللَّيْلِ
और नहीं	वो	मगर	नसीहत	इंसान के लिए	हरगिज़ नहीं	क़सम है चांद की
أَدْبَرَ	وَالصُّبْحِ	إِذَا	أَسْفَرَ	إِنَّهَا	لِاحْدَى	الْكَبِيرِ
वो पलट जाए	और सुबह की	जब	वो रोशन हो जाए	बिला शुबाह वो (जहन्नम)	अलबत्ता एक है	बहुत बड़ी चीज़ों में से
نَذِيرًا	لِلْبَشَرِ	لِمَنْ	شَاءَ	مِنْكُمْ	أَنْ	يَتَقَدَّمَ
डराने वाली है	इंसान को	उसके लिए जो	चाहे	तुम में से	कि	वो आगे बढ़े
يَتَأَخَّرُ	كُلُّ	نَفْسٍ	بِمَا	كَسَبَتْ	رَهِينَةً	إِلَّا
वो पीछे रहे	हर	नफ़्स	बबजह उसके जो	उसने कमाई की	रहन है	सिवाए
أَصْحَابَ الْيَمِينِ	فِي جَنَّتِ	يَتَسَاءَلُونَ	عَنِ الْجُرِمِينَ			
दाएँ हाथ वालों के	बागात में	सवाल कर रहे होंगे	मुजरिमों से			
مَا	سَلَّكُمْ	فِي سَقَرٍ	قَالُوا	لَمْ	نَكُ	مِنَ الْمُصَلِّينَ
किस चीज़ ने	दाख़िल किया तुम्हें	दोज़ख में	वो कहेंगे	ना	थे हम	नमाज़ पढ़ने वालों में से
وَلَمْ	نَكُ	نُطْعِمُ	الْيُسْكِينِ	وَكُنَّا	نَخُوضُ	مَعَ
और ना	थे हम	हम खाना खिलाते	मिस्कीन को	और थे हम	हम बहस करते	साथ

الْخَائِضِينَ 45	وَ كُنَّا	نُكَذِّبُ	بِیَوْمِ	الدِّینِ 46	حَتَّى	أَتَنَا
बहस करने वालों के	और थे हम	हम झुठलाते	दिन को	बदले के	यहां तक कि	आ गई हमारे पास
الْيَقِينُ 47	فَمَا	تَتَفَعَّهُمْ	شَفَاعَةُ	الشُّفَعَاءِ 48	فَمَا	لَهُمْ
यक़ीनी चीज़ (मौत)	तो ना	काम आएगी उन्हें	सिफ़ारिश	सिफ़ारिशियों की	तो क्या है	उन्हें
عَنِ التَّذْكِرَةِ	مُعْرِضِينَ 49	كَأَنَّهُمْ	حُرٌّ	مُسْتَنْفِرَةٌ 50	فَرَّتْ	جَوَاب
नसीहत से	ऐराज़ करने करने वाले हैं	गोया कि वो	गधे हैं	सख़्त बिदकने वाले	जो भागे हों	
مِنْ قَسْوَرَةٍ 51	بَلْ	يُرِيدُ	كُلُّ	أَمْرٍ	مِنْهُمْ	أَنْ يُؤْتَى
शेर से	बल्कि	चाहता है	हर	आदमी	उनमें से	कि वो दिया जाए
صُحُفًا	مُنْشَرَّةً 52	كَلَّا	بَلْ	لَا يَخَافُونَ	الْآخِرَةَ 53	كَلَّا
सहीफ़े	खुले हुए	हरगिज़ नहीं	बल्कि	नहीं वो ख़ौफ़ रखते	आख़िरत का	हरगिज़ नहीं
إِنَّهُ	تَذْكِرَةٌ 54	فَمَنْ	شَاءَ	ذَكَرَهُ 55	وَمَا	يَذْكُرُونَ إِلَّا
बेशक वो	एक नसीहत है	पस जो कोई	चाहे	नसीहत हासिल करे उस से	और नहीं	वो नसीहत हासिल करेंगे मगर
أَنْ يَشَاءَ	اللَّهُ 56	هُوَ	أَهْلُ	التَّقْوَى	وَأَهْلُ	الْمَغْفِرَةِ 56
ये कि	चाहे	अल्लाह	वो ही	लायक़ है	तक़वा के	और लायक़ है बख़्शने के
آيَاتُهَا: 40 سُورَةُ الْقِيَمَةِ مَكِّيَّةٌ 31 رُكُوعَاتُهَا: 2						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
لَا أُقْسِمُ	بِیَوْمِ	الْقِيَمَةِ 1	وَلَا	أُقْسِمُ	بِالنَّفْسِ	اللَّوَامَةِ 2
नहीं मैं क़सम खाता हूँ	दिन की	क़यामत के	और नहीं	मैं क़सम खाता हूँ	नफ़्स की	मलामत करने वाले
أَيَحْسَبُ	الْإِنْسَانُ	أَلَّنْ	نَجْمَعُ	عِظَامَهُ 3	بَلَى	قَدِيرِينَ
क्या समझता है	इंसान	कि हरगिज़ नहीं	हम जमा करेंगे	उसकी हड्डियां	क्यों नहीं	कादिर हैं

عَلَى	أَنْ	تُسَوِّى	بَنَانَهُ ④	بَلْ	يُرِيدُ	الْإِنْسَانُ	لِيَفْجُرَ
उस पर	कि	हम दुरुस्त कर दें	उसके पोर-पोर को	बल्कि	चाहता है	इन्सान	कि वो गुनाह करता रहे
أَمَامَهُ ⑤	يَسْأَلُ	أَيَّانَ	يَوْمُ	الْقِيَمَةِ ⑥	فَإِذَا	بَرَقَ	الْبَصَرُ ⑦
अपने आगे भी	वो पूछता है	कब है	दिन	क्रयामत का	फिर जब	चुंधिया जाएंगी	आंखें
وَحَسَفَ	الْقَمَرُ ⑧	وَجُمِعَ	الشَّمْسُ	وَالْقَمَرُ ⑨	يَقُولُ		
और बेनूर हो जाएगा	चाँद	और जमा कर दिए जाएंगे	सूरज	और चाँद	कहेगा		
الْإِنْسَانُ	يَوْمَئِذٍ	أَيْنَ	الْبَفَرُ ⑩	كَلَّا	لَا وَزَرَ ⑪	إِلَى رَبِّكَ	
इंसान	उस दिन	कहाँ है	फरार की जगह	हरगिज़ नहीं	नहीं कोई जाय पनाह	तरफ़ आपके रब के	
يَوْمَئِذٍ	الْبُسْتَقَرُّ ⑫	يُنَبِّئُ	الْإِنْسَانُ	يَوْمَئِذٍ	بِمَا	قَدَّمَ	
उस दिन	ठिकाना है	ख़बर दिया जाएगा	इंसान	उस दिन	उसकी जो	उसने आगे भेजा	
وَأَخَّرَ ⑬	بَلِ	الْإِنْسَانُ	عَلَى نَفْسِهِ	بَصِيرَةً ⑭	وَلَوْ	أَلْقَى	
और उसने पीछे छोड़ा	बल्कि	इंसान	अपने नफ़्स पर	ख़ूब नज़र रखने वाला है	और अगरचे	वो डाले	
مَعَاذِيرَهُ ⑮	لَا تُحَرِّكُ	بِهِ	لِسَانَكَ	لِتَعْجَلَ	بِهِ ⑯	إِنَّ	
मआज़रतें अपनी	ना आप हरकत दीजिए	साथ उसके	अपनी ज़बान को	ताकि आप जल्दी (याद) करें	उसको	बेशक	
عَلَيْنَا	جَمَعَهُ	وَقُرَّانَهُ ⑰	فَإِذَا	قَرَّانَهُ	فَاتَّبِعْ	قُرَّانَهُ ⑱	
हम पर ही है	जमा करना उसका	और पढ़ना उसका	फिर जब	पढ़ें हम उसे	तो पैरवी कीजिए आप	उसके पढ़ने की	
ثُمَّ	إِنَّ	عَلَيْنَا	بَيَّانَهُ ⑲	كَلَّا	بَلْ	تُحِبُّونَ	الْعَاجِلَةَ ⑳
फिर	बेशक	हमारे ही ज़िम्मा है	उसे बयान करना	हरगिज़ नहीं	बल्कि	तुम पसंद करते हो	जल्दी मिलने वाली (दुनिया) को
وَتَذَرُونَ	الْآخِرَةَ ㉑	وَجُوهُ	يَوْمَئِذٍ	نَاصِرَةً ㉒	إِلَى رَبِّهَا		
और तुम छोड़ देते हो	आख़िरत को	कुछ चेहरे	उस रोज़	तरो-ताज़ा होंगे	अपने रब की तरफ़		

نَاطِرَةٌ 23 ج	وَوُجُوهُ	يَوْمَئِذٍ	بَاسِرَةٌ 24 ل	تُظُنُّ	أَنْ	يُفْعَلُ
देखने वाले	और कुछ चेहरे	उस रोज़	बेरौनक होंगे	वो समझ रहे होंगे	कि	किया जाएगा
بِهَا	فَاقِرَةٌ 25 ط	كَلَّا	إِذَا	بَلَغَتْ	التَّرَاقِي 26 ل	وَقِيلَ مَنْ 26 س
साथ उनके	कमरतोड़ देने वाला	हरगिज़ नहीं	जब	पहुँच जाएगी	(जान) हलक को	और कह दिया जाएगा
رَاقٍ 27 ل	وَوَظَنَ	أَنَّهُ	الْفِرَاقُ 28 ل	وَالْتَفَتِ	السَّاقُ	بِالسَّاقِ 29 ل
झाड़-फूंक करने वाला	और वो समझ लेगा	कि बेशक वो	जुदाई का वक़्त है	और लिपट जाएगी	पिंडली	साथ पिंडली के
إِلَى رَبِّكَ	يَوْمَئِذٍ	الْمَسَاقُ 30 ط	فَلَا	صَدَقَ	وَلَا	صَلَّى 31 ل
आपके रब ही की तरफ़	उस रोज़	रवानगी है	पस ना	उसने तस्दीक की	और ना	नमाज़ पढ़ी
وَلَكِنْ	كَذَّبَ	وَتَوَلَّى 32 ل	ثُمَّ	ذَهَبَ	إِلَى أَهْلِهِ	يَتَمَطَّى 33 ط
और लेकिन	उसने झुठलाया	और उसने मुंह मोड़ लिया	फिर	वो चला गया	तरफ़ अपने घरवालों के	अकड़ता हुआ
أَوَّلَى	لَكَ	فَأَوَّلَى 34 ل	ثُمَّ	أَوَّلَى	لَكَ	فَأَوَّلَى 35 ط
अफ़सोस	तुझ पर	फिर अफ़सोस	फिर	अफ़सोस	तुझ पर	फिर अफ़सोस
الْإِنْسَانُ	أَنْ	يُتْرَكَ	سُدَى 36 ط	أَلَمْ	يَكُ	نُطْفَةً
इंसान	कि	वो छोड़ दिया जाएगा	बेकार	क्या ना	था वो	एक नुत्फ़ा
مِنْ مَنِيٍّ	يُمْنِي 37 ل	ثُمَّ	كَانَ	عَلَقَةً	فَخَلَقَ	فَسَوَّى 38 ل
मनी का	जो टपकाया जाता है	फिर	हो गया वो	जमा हुआ खून	फिर उसने पैदा किया	फिर उसने दुरुस्त कर दिया
فَجَعَلَ	مِنْهُ	الزَّوْجَيْنِ	الذَّكَرَ	وَالْأُنْثَى 39 ط	أَلَيْسَ	
फिर उसने बनाया	उससे	जोड़ा	मर्द	और औरत	क्या नहीं है	
ذَلِكَ	بِقَدَرٍ	عَلَى	أَنْ	يُحْيَى	الْهَوْنَى 40 ع	
वो	क्रादिर	उस पर	कि	वो ज़िंदा करे	मुर्दों को	

رُكُوعَاتُهَا: 2

76 سُورَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ 98

آيَاتُهَا: 31

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

هَلْ	أَتَى	عَلَى الْإِنْسَانِ	حِينَ	مِّنَ الدَّهْرِ	لَمْ	يَكُنْ	شَيْئًا
क्या	आया है	इन्सान पर	एक वक़्त	ज़माने में से	कि ना	था वो	कोई चीज़
مَذْكُورًا ①	إِنَّا	خَلَقْنَا	الْإِنْسَانَ	مِنْ نُطْفَةٍ	أَمْشَاجٍ ط		
क्राबिले ज़िक्र	बेशक हम	पैदा किया हमने	इन्सान को	एक नुत्फ़े से	मिले-जुले/मख़लूत		
نَبِّئْهُ	فَجَعَلْنَاهُ	سَبِيْعًا	بَصِيرًا ②	إِنَّا	هَدَيْنَاهُ		
कि हम आज़माएँ उसे	तो बनाया हमने उसे	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब देखने वाला	बेशक हम	हिदायत दी हमने उसे		
السَّبِيلِ	إِمَّا	شَاكِرًا	وَإِمَّا ③	كَفُورًا	إِنَّا	أَعْتَدْنَا	لِلْكَافِرِينَ
रास्ते की	ख़्वाह	शुक्र गुज़ार हो	और ख़्वाह	नाशुक्रा हो	बेशक हम	तैयार कर रखा है हमने	काफ़िरों के लिए
سَلْسِلًا	وَإِغْلًا	وَسَعِيرًا ④	إِنَّ	الْأَبْرَارَ	يَشْرَبُونَ	مِنْ كَاسٍ	
ज़न्जीरों को	और तौक्र को	और भड़कती आग को	बेशक	नेक लोग	पियेंगे	एक सागर से	
كَانَ	مِزَاجُهَا	كَافُورًا ⑤	عَيْنًا	يَشْرَبُ	بِهَا	عِبَادُ	اللَّهِ
होगी	आमेज़िश उसकी	काफ़ूर से	एक चश्मा है	पियेंगे	उससे	बन्दे	अल्लाह के
يُفَجِّرُونَهَا	تَفْجِيرًا ⑥	يُوفُونَ	بِالنَّذْرِ	وَيَخَافُونَ	يَوْمًا		
वो फाड़ ले जाएँगे उसको	फाड़ ले जाना	वो पूरी करते हैं	नज़र/मन्नत	और वो डरते हैं	एक दिन से		
كَانَ	شَرُّهُ	مُسْتَطِيرًا ⑦	وَيُطْعَمُونَ	الطَّعَامَ	عَلَى حُبِّهِ	مُسْكِينًا	
होगा	शर जिसका	फैल जाने वाला	और वो खिलाते हैं	खाना	उसकी मोहब्बत में	मिस्कीन	
وَيَتِيْمًا	وَإِسِيرًا ⑧	إِنَّمَا	نُطْعِمُكُمْ	لِوَجْهِ	اللَّهِ	لَا تُرِيدُ	
और यतीम को	और कैदी को	बेशक	हम खिलाते हैं तुम्हें	चेहरे के लिए	अल्लाह के	नहीं हम चाहते	

مِنْكُمْ	جَزَاءٌ	وَلَا	شُكْرًا ⑨	إِنَّا	نَخَافُ	مِنْ رَبِّنَا	يَوْمًا
तुमसे	कोई बदला	और ना	कोई शुक्रिया	बेशक हम	हम डरते हैं	अपने रब से	दिन से
عَبُوسًا	قَطْرِيرًا ⑩	فَوْقَهُمْ	اللَّهُ	شَرٌّ	ذَلِكَ	الْيَوْمِ	
बहुत तेवरी चढ़ाने वाले	निहायत सख्त	पस बचा लेगा उन्हें	अल्लाह	शर से	उस	दिन के	
وَلَقَهُمْ	نَصْرَةٌ	وَسُرُورًا ⑪	وَجَزَاهُمْ	بِهَا	صَبَرُوا	جَنَّةً	
और वो अता करेगा उन्हें	ताज़गी	और खुशी	और वो बदला देगा उन्हें	बवजह उसके जो	उन्होंने सब्र किया	जन्नत	
وَحَرِيرًا ⑫	مُتَّكِئِينَ	فِيهَا	عَلَى الْأَرَائِكِ ⑬	لَا يَرُونَ	فِيهَا		
और रेशम	तकिया लगाए हुए होंगे	उसमें	मसनदों पर	ना वो देखेंगे	उसमें		
شَبَسًا	وَلَا	زَمَهْرِيرًا ⑬	وَدَانِيَةً	عَلَيْهِمْ	ظِلُّهَا	وَذِلَّتْ	
सख्त धूप	और ना	सख्त ठंडक	और झुके हुए होंगे	उन पर	साये उसके	और ताबेअ कर दिए जाएंगे	
قُطُوفُهَا	تَذْلِيلًا ⑭	وَيُطَافُ	عَلَيْهِمْ	بَانِيَةً	مِنْ فِضَّةٍ	وَأَكْوَابٍ	
फल उसके	ताबेअ किया जाना	और फिराए जाएंगे	उन पर	बर्तन	चांदी के	और प्याले	
كَانَتْ	قَوَارِيرًا ⑮	قَوَارِيرًا	مِنْ فِضَّةٍ	قَدَّارُوهَا	تَقْدِيرًا ⑯		
होंगे	शीशे के	शीशे	चांदी के	उन्होंने अंदाज़ा रखा होगा उनका	खूब अंदाज़ा रखना		
وَيُسْقَوْنَ	فِيهَا	كَأْسًا	كَانَ	مِزَاجُهَا	زَنْجَبِيلًا ⑰	عَيْنًا	فِيهَا
और वो पिलाए जाएंगे	उसमें	एक जाम	होगी	आमेज़िश उसमें	सोंठ की	एक चश्मा होगा	उसमें
تُسَيَّى	سَلْسَبِيلًا ⑱	وَيُطَوَّفُ	عَلَيْهِمْ	وَلَدَانٌ	مُخَلَّدُونَ ⑲		
नाम रखा गया जिसका	सलसबील	और गर्दिश करेंगे	उन पर	लड़के	हमेशा रहने वाले		
إِذَا	رَأَيْتَهُمْ	حَسِبْتَهُمْ	لَوْلَا	مَنْشُورًا ⑲	وَإِذَا	رَأَيْتَ	ثُمَّ
जब	तुम देखोगे उन्हें	तुम समझोगे उन्हें	मोती हैं	बिखरे हुए	और जब	तुम देखोगे	वहाँ

رَأَيْتَ	نَعِيْبًا	وَمُلْكًا	كَبِيْرًا ②٠	عَلَيْهِمْ	ثِيَابُ	سُنْدُسٍ
तुम देखोगे	आसाइशें	और बादशाहत	बहुत बड़ी	उन पर	कपड़े होंगे	बारीक रेशम के
خُضْرُ	وَاسْتَبْرَقُ ٢١	وَحُلُوْا	أَسَاوِرَ	مِنْ فِضَّةٍ ٢٢	وَسَقَاهُمْ	
सब्ज़	और मोटे रेशम के	और वो पहनाए जाएंगे	कंगन	चादी के	और पिलाएगा उन्हें	
رَبُّهُمْ	شَرَابًا	طَهُوْرًا ②١	إِنَّ	هَذَا	كَانَ	لَكُمْ
रब उनका	शराब	पाकीज़ा	बेशक	ये	है	तुम्हारे लिए
سَعِيْكُمْ	مَّشْكُوْرًا ②٢	إِنَّا	نَحْنُ	نَزَّلْنَا	عَلَيْكَ	الْقُرْآنَ
कोशिश तुम्हारी	क्राबिले क़द्र	बेशक हम	हमने ही	नाज़िल किया हमने	आप पर	कुरआन
تَنْزِيْلًا ②٣	فَاصْبِرْ	لِحُكْمِ	رَبِّكَ	وَلَا	تُطِعْ	مِنْهُمْ
आहिस्ता-आहिस्ता नाज़िल करना	पस सन्न कीजिए	हुक़म के लिए	अपने रब के	और ना	आप इताअत कीजिए	उनमें से
أَوْ	كَفُوْرًا ②٤	وَادْكُرْ	اِسْمَ	رَبِّكَ	بُكْرَةً	وَاصِيْلًا ②٥
या	बहुत नाशुक्रे की	और याद कीजिए	नाम	अपने रब का	सुबह	और शाम
وَمِنَ اللَّيْلِ	فَاسْجُدْ	لَهُ	وَسَبِّحْهُ	لَيْلًا	طَوِيْلًا ②٦	إِنَّ
और रात के कुछ हिस्से में	पस सज्दा कीजिए	उसके लिए	और तस्बीह कीजिए उसकी	रात में	लम्बी	बेशक
هَؤُلَاءِ	يُحِبُّونَ	الْعَاجِلَةَ	وَيَذَرُونَ	وَرَاءَهُمْ	يَوْمًا	ثَقِيْلًا ②٧
ये लोग	मोहब्बत रखते हैं	जल्दी मिलने वाली (दुनिया से)	और वो छोड़ देते हैं	पीछे अपने	एक दिन	बहुत भारी
نَحْنُ	خَلَقْنَاهُمْ	وَشَدَدْنَا	أَسْرَهُمْ ٢٨	وَإِذَا	شِئْنَا	بَدَّلْنَا
हम ही ने	पैदा किया हमने उन्हें	और मज़बूत किए हमने	जोड़ उनके	और जब	चाहें हम	बदल दें हम
أَمْثَلَهُمْ	تَبْدِيْلًا ②٨	إِنَّ	هَذِهِ	تَذْكِرَةٌ ٢٩	فَمَنْ	شَاءَ
उन जैसों को	बदल देना	बेशक	ये	एक याद दिहानी है	तो जो कोई	चाहे
						اتَّخَذَ
						वो बना ले

إِلَىٰ رَبِّهِ	سَبِيلًا 29	وَمَا	تَشَاءُونَ	إِلَّا	أَنْ	يَشَاءَ	اللَّهُ ط
तरफ़ अपने रब के	रास्ता	और नहीं	तुम चाहते	मगर	ये कि	चाहे	अल्लाह

إِنَّ	اللَّهُ	كَانَ	عَلِيمًا	حَكِيمًا 30	يُدْخِلُ	مَنْ	يَشَاءُ
बेशक	अल्लाह	है वो	बहुत इल्म वाला	खूब हिक्मत वाला	वो दाखिल करता है	जिसे	वो चाहता है

فِي رَحْمَتِهِ ط	وَالظَّالِمِينَ	أَعَدَّ	لَهُمْ	عَذَابًا	أَلِيمًا 31
अपनी रहमत में	और ज़ालिम लोग	उसने तैयार कर रखा है	उनके लिए	अज़ाब	दर्दनाक

آيَاتُهَا: 50	سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ مَكِّيَّةٌ 33	رُكُوعَاتُهَا: 2
---------------	--------------------------------------	------------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْمُرْسَلَاتِ	عُرْفًا 1	فَالْعَصْفِ	عَصْفًا 2
क़सम है हवाओं की जो छोड़ी जाती हैं	मुतवातिर	फिर उनकी जो तेज़ चलती हैं	तेज़ चलना

وَالنُّشْرِاتِ	نَشْرًا 3	فَالْفُرْقِ	فَرَقًا 4	فَالْبُلْقِ
और उनकी जो फैलाने वाली हैं	फैलाना	फिर जो जुदा करने वाली हैं	जुदा करना	फिर जो डालने वाली हैं

ذِكْرًا 5	عُذْرًا	أَوْ	نُذْرًا 6	إِنْبَاءًا	تَوْعْدُونَ	لَوَاقِعٌ ط 7
ज़िक्र को	उज़र के तौर पर	या	डरावे के तौर पर	बेशक जो	तुम वादा दिए जाते हो	अलबत्ता वाक़ेअ होने वाला है

فَإِذَا النُّجُومُ طَبِسَتْ ۙ 8	وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ۙ 9	وَإِذَا الْجِبَالُ
मिट्टा दिए जाएंगे	खोला जाएगा	पहाड़

نُسِفَتْ 10	وَإِذَا الرُّسُلُ	أُقِيتَتْ 11	لِأَيِّ يَوْمٍ	أُجِّلَتْ 12
उड़ा दिए जाएंगे	और जब	रसूल	किस दिन के लिए	मुअख़्खर किए गए

لِيَوْمٍ	الْفَصْلِ 13	وَمَا	أَدْرَاكَ	مَا	يَوْمُ	الْفَصْلِ 14	وَيْلٌ
दिन के लिए	फ़ैसले के	और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है	दिन	फ़ैसले का	हलाकत है

يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ⑮	أَلَمْ	نُهْلِكِ	الْأَوَّلِينَ ⑮	ثُمَّ	نُتْبِعُهُمْ
झुठलाने वालों के लिए	क्या नहीं	हमने हलाक किया	पहलों को	फिर	हम पीछे लाते हैं उनके
الْآخِرِينَ ⑮	كَذَلِكَ	نَفْعَلُ	بِالْجُرْمِينَ ⑮	وَيْلٌ	يَوْمَئِذٍ
बाद वालों को	इसी तरह	हम करते हैं	साथ मुजरिमों के	हलाकत है	उस दिन
لِلْمُكَذِّبِينَ ⑮	أَلَمْ	نَخْلُقْكُمْ	مِنْ مَّاءٍ	مَّهِينٍ ⑮	فَجَعَلْنَاهُ
झुठलाने वालों के लिए	क्या नहीं	हमने पैदा किया तुम्हें	पानी से	हकीर	फिर रखा हमने उसे
فِي قَرَارٍ	مَّكِينٍ ⑮	إِلَى قَدَرٍ	مَّعْلُومٍ ⑮	فَقَدَرْنَا ⑮	فَنِعْمَ
ठिकाने में	मज़बूत	एक वक़्त तक	मालूम	फिर अंदाज़ा किया हमने	पस कितने अच्छे हैं
الْقَادِرُونَ ⑮	وَيْلٌ	يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ⑮	أَلَمْ	نَجْعَلِ	الْأَرْضَ
अंदाज़ा करने वाले	हलाकत है	उस दिन	झुठलाने वालों के लिए	क्या नहीं	हमने बनाया
كِفَاتًا ⑮	أَحْيَاءَ	وَأَمْوَاتًا ⑮	وَجَعَلْنَا	فِيهَا	رَوَاسِيَ
समेटने वाली	ज़िंदों	और मुर्दों को	और बनाए हमने	उसमें	पहाड़
وَأَسْقَيْنَكُمْ	مَاءً	فُرَاتًا ⑮	وَيْلٌ	يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ⑮	
और पिलाया हमने तुम्हें	पानी	सीठा	हलाकत है	उस दिन	झुठलाने वालों के लिए
إِنْطَلِقُوا إِلَى مَا	كُنْتُمْ بِهِ	تُكَذِّبُونَ ⑮	إِنْطَلِقُوا	إِلَى ظِلٍّ	
चलो	उसके जो	थे तुम	उसे	तुम झुठलाते	चलो
ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ⑮	لَا ظِلِيلٍ	وَلَا	يُغْنِي	مِنَ اللَّهَبِ ⑮	إِنَّهَا
तीन शाखों वाले	ना साया देने वाला होगा	और ना	वो बचाएगा	शोले से	बेशक वो
تَرْمِي	بِشَرِّ	كَالْقَصْرِ ⑮	كَأَنَّهُ	جِلَّتْ	صَفْرًا ⑮
वो फेंकेगी	चिंगारियां	महल जैसी	गोया कि वो	ऊंट हैं	ज़र्द रंग के
					हलाकत है

يَوْمَئِذٍ	لِّلْمُكَذِّبِينَ 34	هَذَا	يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ 35	وَلَا	يُؤْذَنُ
उस दिन	झुठलाने वालों को लिए	ये	दिन है	ना वो बोल सकेंगे	और ना इजाज़त दी जाएगी
لَهُمْ	فَيَعْتَذِرُونَ 36	وَيْلٌ	يَوْمَئِذٍ	لِّلْمُكَذِّبِينَ 37	هَذَا
उन्हें	कि वो मआज़रत करें	हलाकत है	उस दिन	झुठलाने वालों के लिए	ये दिन है
الْفُصْلِ 3	جَعْنَكُمْ	وَالْأَوَّلِينَ 38	فَإِنْ	كَانَ	لَكُمْ
क़ैसले का	जमा कर दिया हमने तुम्हें	और पहलों को	फिर अगर	है	तुम्हारे लिए कोई चाल
فَكِيدُونَ 39	وَيْلٌ	يَوْمَئِذٍ	لِّلْمُكَذِّبِينَ 40	إِنَّ	الْمُتَّقِينَ
पस चाल चलो मुझसे	हलाकत है	उस दिन	झुठलाने वालों के लिए	बेशक	मुत्तकी लोग सायों में
وَعُيُونَ 41	وَفَوَاكِهَ	مِمَّا	يَشْتَهُونَ 42	كُلُوا	وَأَشْرَبُوا
और चश्मों में होंगे	और फल	उसमें से जो	वो ख्वाहिश करेंगे	खाओ	और पियो मजे से
بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُونَ 43	إِنَّا	كَذَلِكَ	نَجْزِي
बवजह उसके जो	थे तुम	तुम अमल करते	बेशक हम	इसी तरह	हम बदला देते हैं नेकोकारों को
وَيْلٌ	يَوْمَئِذٍ	لِّلْمُكَذِّبِينَ 45	كُلُوا	وَتَسْتَعُوا	قَلِيلًا
हलाकत है	उस दिन	झुठलाने वालों के लिए	खाओ	और फ़ायदा उठा लो	थोड़ा सा
إِنَّكُمْ	مُجْرِمُونَ 46	وَيْلٌ	يَوْمَئِذٍ	لِّلْمُكَذِّبِينَ 47	وَإِذَا
बेशक तुम	मुजरिम हो	हलाकत है	उस दिन	झुठलाने वालों के लिए	और जब
قِيلَ	لَهُمْ	ارْكَعُوا	لَا يَرْكَعُونَ 48	وَيْلٌ	يَوْمَئِذٍ
कहा जाता है	उनसे	रुकूअ करो	नहीं वो रुकूअ करते	हलाकत है	उस रोज़
لِّلْمُكَذِّبِينَ 49	فَبِأَيِّ	حَدِيثٍ	بَعْدَهُ	يَوْمَئِذٍ	يَوْمَئِذٍ 50
झुठलाने वालों के लिए	तो साथ किस	बात के	बाद उसके	वो ईमान लाएंगे	